ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 18 जनवरी 2026 | **आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र** | सप्ताह रविवार, 18 जनवरी 2026 से 24 जनवरी 2026

माघ कृ. 15 ● वि० सं०-2082 ● वर्ष 67, अंक 03, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 201 ● सृष्टि-संवत् 1,96,08,53,126 ● पृ.सं. 1-12 ● मूल्य - 5/- रु. ● वार्षिक शु. 300/- रु.

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. बल्लभगढ़ में 100 कुण्डीय हवन

आर्य युवा समाज डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल बल्लभगढ़ के तत्त्वावधान में अटल पार्क, सेक्टर–2, बल्लभगढ़ में **'नो नशा नेशन'** अभियान के अंतर्गत 100 कुण्डीय हवन एवं जन–जागरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

आर्य युवा समाज के राष्ट्रीय अध्यक्ष, योगी सूरी ने नशामुक्त भारत का मन्त्र देते हुए कहा कि–नशामुक्त भारत केवल एक लक्ष्य नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के उज्ज्वल भविष्य का संकल्प है। हवन की दिव्य अग्नि विवेक, संयम और संतुलित जीवन की प्रेरणा देती है, जबकि नशा पतन का कारण बनता है।

मुख्य अतिथि मूलचंद शर्मा (क्षेत्रीय विधायक) ने इस आयोजन की सराहना की और कहा कि यह 100 कुण्डीय हवन केवल वैदिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक ऊर्जा, आध्यात्मिक संतुलन और नैतिक मूल्यों को जागृत करने का माध्यम है।

प्रधानाचार्या नमिता शर्मा ने सभी अतिथियों का स्वागत व आभार प्रकट किया।

छात्रों द्वारा प्रस्तुत पोस्टर प्रदर्शनी एवं नुक्कड़ नाटक ने नशे के दुष्परिणामों को अत्यंत मार्मिक एवं प्रभावशाली शैली में प्रदर्शित किया।

इस अवसर पर श्रीमती प्रिया सूरी, डॉक्टर अनूप कुमार (कोर्डिनेटर कॉलेजिज एंड हायर एजुकेशन डीएवी सीएमसी), के अतिरिक्त स्थानीय पुलिस अधिकारी, आर्यसमाजी तथा सम्मानित नागरिक उपस्थित रहे। शान्ति पाठ से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

एच.एम.वी. जालन्धर में नववर्ष का प्रथम यज्ञ

हंसराज महिला महाविद्यालय में 'यज्ञ' से नव वर्ष का शुभारम्भ किया गया। प्राचार्या डॉ. श्रीमती एकता खोसला जी ने सर्वप्रथम सभी को नव वर्ष की मंगलाकामनाएँ दीं एवम् सभी के उत्तम स्वास्थ्य, सक्रिय सकारात्मक मन एवम् घर परिवार में सुख समृद्धि हेतु परमात्मा से प्रार्थना की तथा अपनी भारतीय संस्कृति की धरोहर को सदा अपनाने की एवम् आर्य समाज की शिक्षाओं को अपनाकर समाज की उन्नति, संस्था की उन्नति के लिए सदा बढ़–चढ़कर भागीदारी करने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर सभी नॉन टीचिंग सदस्यों ने भाग लिया एवम् अपने विचार सबके साथ सांझा किए। परम्परानुसार जिन लोगों के जन्मदिन इस माह में थे प्राचार्या जी ने महाविद्यालय की ओर से उन्हें सप्रेम भेंट देकर शुभकामनाएँ दी। मैडम जसबीर, मैडम अमनप्रीत कौर, मैडम सुखजीत, माली प्रेम कुमार, सुप्रिंटेंडेंट अकाउंट्स श्री पंकज ज्योति जी ने अपने–अपने विचार सभा के साथ सांझा किए। यज्ञ सम्पादन संस्कृत विभागाध्यक्षा डॉ. मीनू तलवाड़ ने किया।

शान्ति पाठ एवम् प्रसाद वितरण से यज्ञ सम्पन्न हुआ।

डी.ए.वी. इंटरनैशनल, अमृतसर में विशेष भजन संध्या

डी.ए.वी. इंटरनैशनल स्कूल, अमृतसर में नव वर्ष 2026 के प्रथम दिन यज्ञशाला' में पावन हवन यज्ञ एवं भजन संध्या के आयोजन के साथ नववर्ष का स्वागत किया गया।

प्राचार्या डॉ. अंजना गुप्ता, शिक्षक वर्ग एवं गैर–शिक्षक वर्ग द्वारा हवन की पवित्र अग्नि में वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियाँ अर्पित की गईं। इस अवसर पर वैदिक भजनों का गायन भी किया गया।

प्राचार्या ने अपने संबोधन में कहा कि ईश्वर सृष्टिकर्ता है, वह अज्ञेय, अनंत और सर्वशक्तिमान है। उसकी इच्छा के विपरीत संसार में कोई भी कार्य संभव नहीं। ईश्वर की उपासना महर्षि दयानंद सरस्वती ने की थी। महर्षि के पदचिह्नों पर चलते हुए हम सदैव मानव कल्याण को ही अपना लक्ष्य मानें। यज्ञ करके हम ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि वर्ष 2026 सभी के जीवन में नई उमंग, नई ऊर्जा का संचार हो।

जो सब जगत् के पदार्थों को संयुक्त करता और सब विद्वानों का पूज्य है और ब्रह्मा से लेके सब ऋषि मुनियों का पूज्य था, है और होगा, इससे उस परमात्मा का नाम **'यज्ञ'** है। क्योंकि वह सर्वत्र व्यापक है। स. प्र. समु. १

{संपादक – पूनम सूरी}

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 18 जनवरी 2026 से 24 जनवरी 2026

ब्रह्म- क्षत्र की श्री

● **डॉ. रामनाथ वेदालंकार**

इदं मे ब्रह्म च क्षत्र, चोभे श्रियमश्नुताम् ।
मयि देवा दधतु श्रियमुत्तमां, तस्यै ते स्वाहा।।

यजु ३२.१६

ऋषिः **श्रीकामः**। देवता **देवाः (विद्वांसः राजानश्च)**। छन्दः **अनुष्टुप्** (शङ्क मती)।

● **(मे)** मेरा (इदं) यह **(ब्रह्म च क्षतं च)** ब्रह्मण–धर्म और क्षात्र–धर्म **(उभे)** दोनों **(श्रियं)** श्री को **(अश्नुतां)** प्राप्त हों। **(देवाः)** विद्वद्गण और राजा लोग **(मयि)** मेरे अन्दर **(उत्तमां श्रियं)** उत्तम श्री को **(दधतु)** स्थिर करें। **(तस्यै ते)** उस तुझ [श्री] के लिए **(स्वाहा)** स्वागत–वचन (है)।

● प्रत्येक राष्ट्र में ब्रह्म और क्षत्र दोनों का होना आवश्यक है। कोई भी राष्ट्र ज्ञान–विज्ञान के शिक्षक, आस्तिकता और सच्चरित्रता के प्रचारक, धर्म के उद्धारक ब्राह्मणों से धृत तथा राष्ट्र की रक्षा करनेवाले एवं अवसर आने पर राष्ट्र–हितार्थ अपना बलिदान तक कर देनेवाले वीर क्षत्रियों से रक्षित होता है। इन दोनों में से एक के भी अभाव में राष्ट्र का शरीर खड़ा रह सकना कठिन है। बड़े–बड़े बली और सैन्य–शक्ति में अग्रणी राष्ट्र ब्रह्म–बल के अभाव के कारण अपने शक्ति–प्रदर्शन की धुन में दूसरे राष्ट्रों के साथ युद्ध करके नष्ट–भ्रष्ट हो गये। इसके विपरीत अनेक शान्ति प्रिय और ज्ञान–विज्ञान के उपासक–राष्ट्र आत्म–रक्षा के साधन पास न होने से दूसरे राष्ट्रों द्वारा कवलित कर लिये गये।

राष्ट्र के समान व्यक्ति में भी ब्रह्म अर्थात ज्ञान–विज्ञान, ईश्वर–विश्वास, त्याग, अपरिग्रह आदि का गुण और क्षत्र अर्थात् क्षत से बचने–बचाने का तथा आत्म–रक्षा एवं पर–रक्षा का गुण, दोनों का होना अनिवार्य है। किसी एक के भी न होने पर व्यक्ति में न्यूनता रहती है, जिसके कारण वह उन्नत नहीं हो सकता। अतः मैं भी चाहता हूँ कि मेरे ब्रह्म और क्षत्र दोनों श्री को, उत्कर्ष को, परम शोभा को प्राप्त करें। मेरे राष्ट्र में जो भी देव हैं, धर्मात्मा विद्वद्गण हैं, अध्यापक –उपदेशक हैं, राजा और राज्यधिकारी हैं, वे सदुपदेश, शिक्षा और अपने आदर्श चरित्र के उदाहरण से मेरे अन्दर ब्रह्म और क्षत्र की परम श्री को सुदृढ़ रूप से स्थापित करें। ब्रह्म और क्षत्र के समन्वय से उत्पन्न होने वाली श्री मेरे लिए अतिशय स्पृहणीय है, जीवन के उत्कर्ष के लिए अनिवार्य रूप से वरणीय है। हे ब्रह्म–क्षत्र की श्री! तुम आओ, मेरे अन्तरात्मा में प्रवेश करो, तुम्हारा स्वागत है। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

प्रभु–भक्ति

● **महात्मा आनन्द स्वामी**

पाठक वृन्द ! स्वामी जी की भक्ति रस में डूबी रचना 'प्रभु–भक्ति' का हमने गत अंक में प्रसारण शुरु किया। स्वामी जी ने जब यह रचना लिखी, उसी समय आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान् 'नारायण स्वामी जी' ने इस पुस्तक की सार्थकता पर मनन करके इसकी प्रस्तावना लिखी। उन्होंने लिखा कि मनुष्य को धार्मिकता का जीवन व्यतीत करना चाहिए। अपनी हैसीयत के अनुसार उत्तम कर्म करने चाहिए। इस धार्मिकता के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए उन्होंने मानव के लिए तीन कर्त्तव्य सुझाए जिनका वर्णन विस्तार से प्रस्तुत किया।

मानव अपने कर्मों से केवल स्वयं ही प्रभावित नहीं होता वरन् समाज को भी प्रभावित करता है। फलतः अशांति से पीड़ित संसार को आस्तिक रूपी चिकित्सा से सुखी बनाया जा सकता है। इसी चिकित्सा विधि के सेवन रूप ईश्वर–विश्वास से मनुष्य का आत्मा बलवान बना करता है।....

.... अब आगे

अब हम यहाँ यह बतला देना चाहते हैं कि किस प्रकार आत्मा में शक्ति और बल आया करता है। इसके मुख्यतया पाँच साधन हैं :

पहला साधन–

आत्मा के प्रतिकूल कार्यों से बचना और आत्मानुकूल कार्यों का करना।

प्रतिकूल कार्यों से निर्बलता और अनुकूल कार्यों से आत्मा में सबलता आया करती है। ईश्वर के दिव्य गुण एक से लेकर अन्त तक, प्राणिमात्र के कल्याण के लिए काम में आया करते हैं इसलिए मनुष्य का कर्त्तव्य है कि यथासम्भव, वह उनमें से जितने गुणों को भी अपने आत्मा में ला सके, लाये। आत्मा के प्रतिकूल कार्य वही होते हैं जिनसे अन्यों को कष्ट पहुँचे। ईश्वरीय गुणों की अनुगामना से वह ऐसे ही कार्य कर सकेगा जो आत्मानुकूल हों और किसी को भी कष्ट देने वाले न हों। गुणों को अपने अन्दर लाने का साधन जप है इसलिए दैनिक जप में कुछ समय अवश्य प्रत्येक व्यक्ति को लगाने का यत्न करना चाहिये।

दूसरा साधन–

आत्मनिरीक्षण (Self-inspection) से मनुष्य के भीतर से वे सारे कार्य, जो आत्मा के प्रतिकूल होते हैं, रोके जा सकते हैं। अभिप्राय यह है कि मनुष्य किसी खास समय दूसरों पर ध्यान न देकर केवल अपने कृत्यों पर विचार किया करे और उन कृत्यों में, जो उसे मालूम हों कि दुष्कृत्य हैं, उन्हीं के छोड़ने का निश्चय, परमात्मा की साक्षी करते हुए, कर लेना चाहिये और फिर उस निश्चय को बराबर स्मरण करते रहना चाहिये। सोते समय यह काम अधिक–से–अधिक उत्तम रीति से किया जा सकता है। फलतः प्रतिदिन उसी समय 20 मिनट इस कार्य में लगाने चाहियें। इसका फल यह होगा कि अनेक दुर्गुण और कुकृत्य उससे छूटते रहेंगे। जप से जहाँ मनुष्य में अच्छे गुण आया करते हैं, आत्म–निरीक्षण से वहाँ उसके अन्दर से दुर्गुण निकला करते हैं।

तीसरा साधन–

आत्म–बलबुद्धि का तीसरा साधन तप है। तप कहते हैं कठोरताओं के सहन करने को। कठोरताओं को सहन करने से मनुष्य के भीतर साहस की वृद्धि होती है, जिससे उसे कोई कष्ट, कष्टित नहीं कर सकता। आराम–तलब आदमी सदैव दुःख उठाया करते हैं, परन्तु तपस्वी और अपनी ओर से प्रसन्नता के साथ दुःखों को सहन करने–वाले व्यक्ति सुखमय जीवन व्यतीत किया करते हैं। महाभारत में एक जगह द्रौपदी ने कहा कि–

"सुखं सुखेन नेह जातु लभ्यम्,
दुःखेन साध्वी लभते सुखानि।"

दुःख और सुख के चक्र एक के बाद दूसरा, मनुष्य के सामने क्रमशः आया करते हैं। यदि एक व्यक्ति अपनी ओर से दुःख के चक्र को तपस्या द्वारा अपने सामने ले आता है, तो निश्चित रीति से उसके बाद का चक्र सुख का

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

हैदराबाद में सत्याग्रह के संदर्भ में

शोलापुर में सम्मेलन

● पं. क्षितीश वेदालंकार

अन्ततः 25, 26, 27 दिसम्बर, 1938 को शोलापुर में आर्य महासम्मेलन हुआ जिसकी अध्यक्षता लोकनायक बापू माधव श्री हरि अणे ने की। इस महासम्मेलन में भारत भर से आर्यसमाजों के प्रतिनिधि शामिल हुए, 20 प्रस्ताव पास हुए और 22 हज़ार व्यक्तियों ने सत्याग्रह के लिए अपने नाम दिए। 25 हज़ार से अधिक लोग सम्मेलन में शामिल हुए। सम्मेलन में विभिन्न प्रस्तावों के माध्यम से पहले की गई माँगें दुहराई गईं और उनके न माने जाने पर अहिंसात्मक सत्याग्रह का निश्चय किया गया।

हरिपुरा काँग्रेस के प्रस्ताव के अनुसार अन्य रियासतों की तरह निजाम रियासत में भी स्टेट काँग्रेस की स्थापना का निश्चय किया गया था। काँग्रेस किसी भी पैमाने से न साम्प्रदायिक संस्था थी, न धार्मिक, वह तो उत्तरदायी शासन के लिए और नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिये संघर्षरत थी। जुलाई 1938 तक स्टेट काँग्रेस के 1,200 सदस्य बन गए। पर अधिकांश मुसलमान उसके विरोधी ही रहे। आखिर 7 सितम्बर 1938 को उसे गैर कानूनी संस्था करार दे दिया गया। पहले कह चुके हैं कि अक्तूबर के दूसरे सप्ताह में आर्यसमाज ने, तीसरे सप्ताह में हिन्दू महासभा ने और 24 अक्तूबर, 38 को स्टेट काँग्रेस ने सत्याग्रह की घोषणा कर दी थी। इस प्रकार ये तीनों सत्याग्रह साथ–साथ चल रहे थे। पर स्टेट काँग्रेस को सत्याग्रह शुरु किए मुश्किल से दो मास ही हुए थे कि महात्मा गाँधी के कहने से स्टेट काँग्रेस के संचालकों ने 23 दिसम्बर, 38 से स्टेट काँग्रेस का सत्याग्रह बन्द कर दिया।

उधर स्टेट काँग्रेस का सत्याग्रह बन्द हुआ और इधर शोलापुर में आर्य महासम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन के निश्चयानुसार सारे देश में 22 जनवरी को **'हैदराबाद दिवस'** मनाया गया। अधिकांश नगरों में दिवस शान्तिपूर्वक गुजर गया, पर कई स्थानों पर मुसलमानों ने इसे अपने विरुद्ध समझ कर अनेक प्रकार के विघ्न डाले। दिल्ली में भारी दंगा हुआ जिसमें 18 व्यक्ति घायल हो गए। हैदराबाद खास में यह दिवस मनाने पर 28 हिन्दू गिरफ्तार किए गए। अजमेर में 25 हजार लोगों ने जुलूस निकाला। बरेली में दंगा हुआ जिसमें 50 व्यक्ति गिरफ्तार किए गए। निजाम रियासत के सभी नगरों में ऐसी मुकम्मल हड़ताल हुई कि सब सरकारी अधिकारी देखते ही रह गये।

सत्याग्रह शुरु

महासम्मेलन समाप्त होते ही उसके अध्यक्ष लोकनायक श्री अणे और प्रथम सर्वाधिकारी महात्मा नारायण स्वामी जी ने रियासत के दीवान अकबर हैदरी को अलग–अलग पत्र लिखे और अपनी माँगों को दुहराते हुए 14 दिन का अल्टिमेटम दिया। सार्वदेशिक सभा की ओर से एक पत्र वायसराय को भी भेजा गया। किसी का कोई उत्तर नहीं आया।

इस प्रकार सब वैध उपायों के समाप्त हो जाने पर 22 जनवरी, 1939 को अखिल भारतीय सत्याग्रह की घोषणा कर दी गई। तब तक गत तीन मास में रियासत के 925 सत्याग्रही जेलों में जा चुके थे। नारायण स्वामी जी ने राज्य के इन सब सत्याग्रहियों को अ. भा. आर्य रक्षा समिति के सत्याग्रहियों की कोटि में ही गिने जाने की घोषणा कर दी। 23 जनवरी, 1938 से शोलापुर में सत्याग्रही पहुँचने शुरु हो गए।

प्रश्न था कि सत्याग्रह शुरु कैसे किया जाए। हैदराबाद नगर रियासत के बीच में था, इसलिए किसी भी सवारी से वहाँ पहुँचना सम्भव नहीं था। सीमा पर पुलिस उतार लेती और अन्दर नहीं जाने देती। यों भी निजाम की सी.आई. डी. बहुत चौकन्नी थी। स्वामी जी ने सोचा कि हैदराबाद पहुँचने का सर्वोत्तम उपाय यह हो सकता है कि बम्बई से सीधे विमान में बैठकर हैदराबाद के हवाई अड्डे पर उतरा जाए। 31 जनवरी की तारीख तय की गई परन्तु बम्बई से 3० जनवरी को तार आया कि 9 फरवरी तक विमान में कोई सीट उपलब्ध नहीं है। तब नारायण स्वामी जी ने बम्बई जाना व्यर्थ समझ कर रेल से ही हैदराबाद जाने का निश्चय किया। उधर निजाम की पुलिस को खबर लग गई थी कि स्वामी जी हवाई जहाज से आ रहे हैं इसलिए वह हवाई अड्डे पर उनकी प्रतीक्षा करती रही। इधर स्वामी जी 30 जनवरी की रात को 11 बजे शोलापुर से रेल में बैठे और चुपचाप सवेरे हैदराबाद पहुँच गए। स्टेशन से तांगा करके वे सुल्तान बाजार के आर्यसमाज मन्दिर में पहुँचे। पर वहाँ ताला बन्द था। स्वामी जी बाहर टहलने लगे। थोड़ी देर बाद एक हिन्दू सी.आई.डी. का ध्यान इस अजनबी व्यक्ति की ओर गया। उसने आकर उनका नाम पूछा, स्वामी जी ने अपना नाम बताया। उसने स्वामी जी से पुलिस स्टेशन तक चलने की प्रार्थना की। स्वामी जी ने कहा कि तुम जाकर पुलिस अधिकारियों को खबर कर दो। मैं स्वयं पुलिस स्टेशन नहीं जाऊँगा।

थोड़ी ही देर में पुलिस की मोटर आई और स्वामी जी को पुलिस स्टेशन ले गई। वहाँ सुपरिटेंडेंट तथा अन्य अफसरों ने उनसे अत्यन्त शिष्टाचार पूर्वक बातचीत की। वहीं एक अंग्रेज़ी अफसर भी मौजूद था। उसने कहा कि मैं पिछले चार साल से रियासत में हूँ, मुझे एक भी अवसर स्मरण नहीं आता जब हिन्दुओं की ओर से कोई शिकायत हुई हो और उसका प्रतिकार न किया गया हो।

स्वामी जी ने जब अपनी ओर से पिछले दिनों राज्य में घटी घटनाओं का विवरण दिया, तो सब अफसर भी स्तब्ध रह गए। उन्होंने स्वामी जी को एक लिखित आदेश पत्र दिया कि आप रियासत छोड़कर चले जाएँ क्योंकि आप के यहाँ रहने से शान्तिभंग होने का खतरा है। स्वामी जी ने उस पर हस्ताक्षर तो कर दिये पर उस पर अमल करने से इन्कार कर दिया।

स्वामी जी ने जब अपनी ओर से पिछले दिनों राज्य में घटी घटनाओं का विवरण दिया, तो सब अफसर भी स्तब्ध रह गए। उन्होंने स्वामी जी को एक लिखित आदेश पत्र दिया कि आप रियासत छोड़कर चले जाएँ क्योंकि आप के यहाँ रहने से शान्तिभंग होने का खतरा है। स्वामी जी ने उस पर हस्ताक्षर तो कर दिये पर उस पर अमल करने से इन्कार कर दिया।

तब एक पुलिस अफसर ने स्वामी जी को मोटर में बिठाकर रात को हैदराबाद से 52 मील दूर एक सुनसान डाक बंगले में ले जाकर छोड़ दिया। वहाँ पीने के पानी तक की व्यवस्था नहीं थी। अगले दिन सवेरे, जहाँ से रियासत की सीमा समाप्त होकर ब्रिटिश राज्य की सीमा शुरु होती थी, वहाँ उन्हें छोड़कर पुलिस अफसर चला गया। स्वामी जी वहाँ से बस में बैठकर 1 फरवरी, 1930 को दोपहर दो बजे वापिस शोलापुर पहुँच गए।

उसके बाद महात्मा नारायण स्वामी जी ने 4 फरवरी को बीस सत्याग्रहियों के साथ गुलबर्गा में सत्याग्रह किया और रवाना होने से पहले गुलबर्गा के सूबेदार को तार द्वारा इसकी सूचना दे दी। गुलबर्गा पहुँचते ही जत्थे को गिरफ्तार कर लिया गया। 5 फरवरी को उन्हें मजिस्ट्रेट की अदालत में पेश किया गया और 6 फरवरी को एक–एक वर्ष के कठोर कारावास की सजा दी गई। अन्य अभियोगों के साथ उन पर एक अभियोग यह भी था कि जब रियासत में प्रवेश पर प्रतिबन्ध है, तब उन्होंने रियासत में प्रवेश क्यों किया। सब सत्याग्रहियों के पाँवों में अन्य कैदियों की तरह जेल के नियमानुसार लोहे के कड़े डाल दिए गए। तब तक रियासत में राजनैतिक कैदियों को चोर डाकू आदि अन्य कैदियों से अलग मानने की परम्परा नहीं थी, ब्रिटिश भारत की तरह ए बी सी श्रेणियाँ भी नहीं थी। सत्याग्रह क्या होता है, इसका भी अधिकारियों को आभास नहीं था इसलिए सत्याग्रहियों के साथ वे अन्य कैदियों की तरह ही व्यवहार करते थे।

देशव्यापी आन्दोलन

जब देश भर में यह समाचार फैला कि 75 वर्ष के बूढ़े संन्यासी के साथ निजाम की जेल में कैसा व्यवहार किया जा रहा है, तब आम जनता में उत्तेजना फैलना स्वाभाविक था। अभी तक निजाम ने यह व्यवस्था कर रखी थी कि रियासत के समाचार बाहर न जाने पावें और बाहर के समाचार अन्दर न आने पावें। पर सार्वदेशिक सभा द्वारा सत्याग्रह शुरु किए जाने पर यह दीवार टूट गई। रियासत के हिन्दुओं पर अत्याचारों की खबरें बाहर पहुँचने लगीं। इससे पहले देश की आम जनता इस बात से भी अनभिज्ञ थी कि गत तीन मास से रियासत में आर्यसमाज, हिन्दू महासभा और स्टेट काँग्रेस तीनों की ओर से सत्याग्रह चल रहा था और उसमें काफी व्यक्ति गिरफ्तार हो चुके थे। इतना व्यापक जन समर्थन इससे पहले किसी भी राज्य में किसी भी सत्याग्रह आन्दोलन को मिला हो, स्मरण नहीं आता पर देश अन्धेरे में था। अब जब प्रकाश की किरणें छिटककर बाहर पहुँचने लगीं तो जनता उत्तेजित होती ही।

धीरे–धीरे आर्यसत्याग्रह ज़ोर पकड़ता गया। एक तरह से वही बात

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

गतांक से आगे...

भारतीय नवजागरण और स्वामी दयानन्द सरस्वती

● डॉ. ज्वलन्तकुमार शास्त्री

6. राष्ट्रीय स्वराज्य की आवश्यकता का प्रतिपादन—स्वामी दयानन्द के समकालीन प्रायः हर नेता ने अंग्रेज़ी राज्य की स्तुति की है। न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे और गोपालराव हरिदेशमुख अंग्रेज़ी राज्य को ईश्वरीय देन मानते थे। **{समग्र सावरकर वाङ्मय (प्रथम खण्ड), पृ. 28 (सम्पादक—समग्र सावरकर वाङ्मय प्रकाशन समिति)}** ये दोनों ही समाजसुधारक अंग्रेज़ सरकार के नौकर थे। नवयुग के अग्रदूत भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने छोटे—छोटे अवसरों पर भी अपनी राजभक्ति को स्थान—स्थान पर प्रदर्शित किया है। उदाहरणार्थ उन्होंने ड्यूक ऑफ एडिनवरा की नववधू के लिए **मुँह दिखरावती** पर भी कविता लिखी है। **{ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, पृ. 181}** उन्होंने **अंग्रेज़ राज सुख साज सजे सब भारी,...... पैधन विदेश चलि जात यह अति ख्वारी {(सम्पादक) ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली (प्रथम भाग), पृ0 4701}** कहते हुए भी ईश्वर से प्रार्थना की है कि—हे ईश्वर जब तक गंगा जमुना में पानी है तब तक इनका राज्य स्थिर रहे। **{वही, पृ0 367}** स्वामी दयानन्द सरस्वती के देहावसान के पश्चात् राजनीतिक क्षेत्र में भारतीय कॉंग्रेस (इण्डियन नेशनल कॉंग्रेस) की स्थापना सन् 1885 ई. में हुई। जिसका उद्देश्य ब्रिटिश राज्य के प्रति अव्यभिचारिणी निष्ठा था। **{समग्र सावरकर वाङ्मय (प्रथम खण्ड), पृ. 28 (सम्पादक—समग्र सावरकर वाङ्मय प्रकाशन समिति)}** कॉंग्रेस के नेता महात्मा गाँधी बहुत समय के बाद तक 'साम्राज्यदिन' के रूप में मनाये जाने वाले 'विक्टोरिया—दिन' को पवित्र मानते थे। **{महात्मा गाँधीचे संकलित वाङ्मय (चौथा भाग) पृ0 583 (महाराष्ट्र सरकार का प्रकाशन)}** कॉंग्रेस ने पूर्ण स्वराज्य का ध्येय सन् 1929 ई. में स्वीकार किया। इससे लगभग 55 वर्ष पूर्व स्वामी दयानन्द ने लिखा था—**अन्य देशवासी राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों। {स्वामी दयानन्द सरस्वती, आर्याभिविनय, द्वितीय प्रकाश—यजुर्वेद 38—14 मन्त्र के क्षत्राय धारय की व्याख्या, पृ0 56 (वैदिक पुस्तकालय अजमेर, 2023 ई.}** उन्होंने अंग्रेज़ों के तथाकथित न्यायपूर्ण सुराज्य की आलोचना करते हुए लिखा था—**"इसी से ईसाई लोग ईसाइयों का बहुत पक्षपात कर किसी गोरे ने काले को मार दिया हो, तो भी बहुधा पक्षपात से निरपराधी कहकर छोड़ देते हैं।" {वही, सत्यार्थप्रकाश, त्रयोदश समुल्लास, पृ. 803, (रामलाल कपूर ट्रस्ट सोनीपत—हरयाणा आर्य समाज—शताब्दी संस्करण, द्वितीय बार—1975 ई.)}** स्वामी जी इसी सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के त्रयोदश समुल्लास में सिंह गर्जना करते हुए यूरोपीय साम्राज्यवाद पर तीखा प्रहार करते हुए लिखते हैं कि—**"वाह! तभी तो ईसाई लोग परदेशियों के माल पर ऐसे झुकते हैं कि जैसे—प्यासा जल पर, भूखा अन्न पर।" {वही, सत्यार्थप्रकाश, त्रयोदश समुल्लास, पृ. 778}** इतना ही नहीं, उन्होंने कैंपबेल—बैनर—मैन से वर्षों पूर्व यह घोषित किया था कि सुराज्य, स्वराज्य का स्थानापन्न नहीं बन सकता, उन्होंने लिखा था—**"कोई कितना ही करे परन्तु जो स्वदेशीय राज्य होता है वह सर्वोपरि उत्तम होता है...... प्रजा पर माता—पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।" {वही, सत्यार्थप्रकाश अष्टम समुल्लास, पृ. 204 (प्रकाशक— परोपकारिणी सभा, अजमेर, 41वाँ संस्करण, 2019 ई)}** स्वामी दयानन्द सरस्वती के राजनीति विषयक विचारों का ऐतिहासिक महत्त्व है। आद्य क्रान्तिकारक श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ने स्वामीजी से ही स्वराज्य की प्रेरणा प्राप्त की थी। प्रसिद्ध क्रान्तिकारक विनायक दामोदर सावरकर ने उन्हें **"स्वाधीनता संग्राम का सर्वप्रथम योद्धा" {स्वामी दयानन्द सरस्वती, पृ. 252 ('जनज्ञान') मासिक पत्रिका का जुलाई—अगस्त—अंक 1971 ई.)}** माना है। लाला लाजपतराय ने उनके सम्बन्ध में कहा है कि—**स्वामी दयानन्द मेरे गुरु हैं.... वे मेरे धर्म के पिता हैं।......मेरे गुरु ने मुझे स्वतन्त्रतापूर्वक विचार करना, बोलना और कर्त्तव्य पालन करना सिखाया। {वही, पृष्ठ—253}** स्वराज्यमंत्र के उद्गाता लोकमान्य तिलक ने उन्हें **"स्वराज्य का सर्वप्रथम सन्देशवाहक" {वही, पृष्ठ—252}** कहा है। स्वामीजी के राजनीतिक कार्य की महत्ता का अनुमान करके स्वतन्त्र भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ० श्री राजेन्द्र प्रसाद ने कहा था कि **"ऋषि दयानन्द ने भारतोद्धार का जो सूत्र रचा था, उसी का भाष्य आज महात्मा गाँधी कर रहे हैं।" {भवानीदयाल संन्यासी, प्रवासी की आत्मकथा, पृष्ठ 369}** लौहपुरुष सरदार बल्लभभाई पटेल ने अपने जीवन के अन्तिम भाषण में ऋषि दयानन्द को श्रद्धांजलि देते हुए कहा था—The greatest contribution of Swami Dayanand Was that he saved the country from falling deeper into the morass of helplessness, he actually lay the foundation of India's freedom. अर्थात् स्वामी दयानन्द का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने राष्ट्र को अधोमुखी असहायावस्था की दलदल से निकाला। वस्तुतः उन्होंने भारत की स्वतंत्रता की नींव रखी।

7. अन्य राष्ट्रों की स्वराज्य भावना का आदर—सन् 1877 से 1881 ई. तक अफगानों के साथ हुए युद्ध में अंग्रेज़ों के विजयी होने पर भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने **विजय—वल्लरी** आदि कविताएँ लिखकर विजेता का अभिनन्दन किया था। **{(सम्पादक) ब्रजरत्नदास, भारतेन्दु ग्रन्थावली (द्वितीय खण्ड), पृष्ठ 793}** परन्तु स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सन् 1880 ई. में लिखी **संस्कृतवाक्यप्रबोध** नामक पुस्तक में संघर्षरत अफगानों का पक्ष लेकर टिप्पणी की है कि "पशु—पक्षी तक अपने घर की रक्षा करने के लिए यथाशक्ति लड़ते ही हैं।" **{स्वामी दयानन्द विरचित 'संस्कृत वाक्य प्रबोध' के 'राजसभा प्रकरण' का प्रकृत वर्णन इस प्रकार है—'पराजिता अपि यवना अद्यापि उपद्रवं न त्यजन्ति।' इसके उत्तर में स्वामीजी लिखते है—अयं खलु पशुपाक्षिणामपि स्वभावोऽस्ति, यदा कश्चित् तद्गृहादिकं गृहीतुमिच्छेत् तदा यथाशक्ति युद्धयन्त एव।।" अर्थात् यह तो पशु—पक्षियों का भी स्वभाव है, जब कोई उनके घर (घोंसले) आदि को छीन लेने की इच्छा करता है तब वे यथाशक्ति युद्ध करते ही हैं। व्यंजना से स्वामीजी यह कहना चाहते हैं कि जब पशु—पक्षी भी अपने घर को सहजतया नहीं छोड़ते तो स्वमातृभूमि पर विदेशियों के अधिकार को कोई स्वाभिमानी (अफगान) राष्ट्रभक्त कब तक सहन करेगा।}** इस टिप्पणी से स्वामीजी की व्यापक और उन्नत वैश्विक राजनीतिक चेतना का परिचय मिलता है। स्पष्ट है कि स्वामीजी प्रत्येक राष्ट्र की स्वराज्य—भावना का आदर करते हैं।

8. स्वदेशी वस्तु, शिल्प और कलाओं की पक्षधरता—स्वराज्य प्राप्ति के साधनों के रूप में लोकमान्य तिलक और महात्मा गांधी द्वारा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार से बहुत पूर्व स्वामी दयानन्द सरस्वती ने स्वदेशी का प्रचार किया था। वे अपने भक्तों से "अपने ही देश की वस्तु तथा वेश को अपनाने **{स्वामी सत्यानन्द, श्रीमद्दयानन्दप्रकाश, पृष्ठ—291}** का आग्रह करते थें, उन्होंने यूरोपियनों की स्वदेशभक्ति का वर्णन करते हुए लिखा है—" (वे) अपने देश के बने हुए जूते को ऑफिस और कचहरी में जाने देते हैं, इस देशी जूते को नहीं। इतने ही से ये समझ लो कि अपने देश के बने जूतों का कितना मान प्रतिष्ठा करते हैं, उतना भी अन्य—देशस्थ मनुष्यों का नहीं करते। **{स्वामी दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थप्रकाश, पृ. 594, (रामलाल कपूर ट्रस्ट, शताब्दी संस्करण, 1975 ई.)}** स्वामीजी ने श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा को ब्यावर की प्रथम स्वदेशी मिल का प्रबन्धक बनने की अनुमति दी थी। **{जयदेव आर्य, दयानन्द की देन (लेख), पृ0 61 ('आर्य जगत् ऋषि बोधाङ्क—1969 ई)}** विदेशी शासन के आर्थिक शोषण के प्रतीक **नमक कर** का विरोध स्वामी दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) में किया था। **{स्वामी दयानन्द सरस्वती, सत्यार्थप्रकाश, (प्रथम संस्करण) पृष्ठ 384—385 (स्टार प्रेस, बनारस, 1875 ई.)}** उन्होंने स्वदेशी उद्योगों को बढ़ाने के लिए अपने एक भक्त को सलाह दी थी कि वे अपने पुत्र को कला कौशल सीखने के लिए इंग्लैण्ड भेज दें। **{भगवद्दत्त (सम्पादक), ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, पृ. 249, (द्वितीय संस्करण)}** उन्होंने भारतीय विद्यार्थियों की आधुनिक शिल्पकलाएँ सीखने के लिए जर्मनी के प्रो. जी. वाईज और बैडन महोदयों से पत्र—व्यवहार भी किया था। **{स्वामी सत्यानन्द, श्रीमद्दयानन्द प्रकाश, पृष्ठ 08}** कानपुर के रईस गुरुप्रसाद और प्रतापनारायण द्वारा मन्दिर बनवाए जाने पर स्वामीजी ने उनसे कहा था—"कोई कला—कौशल का कारखाना खोलते जिससे देश और जाति का भला होता। **{(क) हरिश्चन्द्र विद्यालंकार, महर्षि दयानन्द सरस्वती, पृष्ठ 122 (ख) भगवद्दत्त (सम्पादक), ऋषि दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, पृष्ठ—214 (द्वितीय संस्करण)}**

अध्यापक आवास, स्टेशन रोड,
अमेठी, (उत्तर प्रदेश)—227405
मो. 7303474301

मानवता के सच्चे रक्षक-महान् गुरु तेगबहादुर जी

● पंडित नन्दलाल 'निर्भय'

"सन्तों गुरुओं की धरती है,
भारत देश महान सुनो।
देश भक्त बलवान जहाँ जन्में
थे, वीर जगत् सुनो।।
जिन वीरों ने, देश धर्म हित,
भारी कष्ट उठाया था।
प्राणों की आहुति देकर,
क्षत्रिय धर्म निभाया था।।
उन वीरों की यश गाथाएँ,
गाता है, संसार सुनो।
उनकी शिक्षाओं को मानों,
यदि चाहो उद्धार सुनो।।
ईश्वर भक्त, धर्म रक्षक,
गुरु तेग बहादुर नामी थे।
मानवता के सम्बल प्रहरी,
बल विद्या के स्वामी थे।।

धर्म प्रेमी सज्जनों! हमारे प्यारे भारत देश जैसा महान देश सारे संसार में कोई नहीं है। इस देव भूमि भारत के बराबर ऋषि–मुनि, धर्मात्मा, त्यागी तपस्वी, महावीर बलवान, बहादुर अन्यत्र कहीं नहीं हुए। इस लेख द्वारा मैं महान् ईश्वर भक्त, मानवता के प्रहरी, धर्म रक्षक गुरु तेग बहादुरजी की बलिदान गाथा आपको सुना रहा हूँ। आशा है कि आप इसे पढ़कर–समझ कर अपना जीवन सफल करोगे तथा औरों को भी प्रेरित करोगे।

महान् गुरु तेग बहादुर जी का बचपन का नाम त्याग मल था। वे छठे बादशाह श्री हरिगोविन्द साहिब जी व माता नानकी जी की सन्तान थे। उनका जन्म एक अप्रैल सन सोलह सौ इक्कीस (1–4–1621) ईस्वी को अमृतसर (पंजाब) में हुआ था। वहाँ अब गुरुद्वारा साहिब "गुरु के महल" के नाम से सुशोभित है। दुनियाँ में प्रचलित एक आम धारणा है कि जब भी मानवता पर घोर अत्याचार होता है, तब मानवता एवम् धर्म की रक्षा के लिए परमात्मा कोई महान आत्मा पापियों से लड़ने, धर्म रक्षा करने को अवश्य भेज देता है। गुरु तेग बहादुर जी के जन्म के समय भारत पर मुगल बादशाह औरंगज़ेब का कुशासन था। वह पूरे भारत वर्ष का इस्लामी करण करना चाहता था।

भारत में उस समय 90 प्रतिशत जनता सनातन धर्म को मानने वाली थी। औरंगज़ेब के धर्म परिवर्तन के लिए किये अत्याचारों से सताए हुए उस समय के ब्राह्मण तथा अन्य हिन्दु नेता पंडित कृष्ण रामजी ने अपने मुख्य साथियों के साथ श्री आनन्द पुर (पंजाब) पहुँच कर अपना दुःख इस प्रकार प्रकट किया–

"हे ईश्वर भक्त सदाचारी,
अब सुन लो बात हमारी तुम।
हम अच्छी तरह जानते हैं,
हो वेदों के प्रचारी तुम।।
पापी औरंगज़ेब हमें नित
भारी त्रास दिखाता है।
तलवार हाथ में लेकर वह,
हम सबको दुष्ट डराता है।।
कहता है तुम सब मुसलमान,
बन जाओ तो बच जाओगे।
यदि बात न मेरी मानोगे,
तो सज़ा मौत की पाओगे।।
हम पास तुम्हारे गुरुदेव,
इसलिए आज सब आए हैं।
हम फँसे हुए हैं संकट में,
इसलिए सभी घबराएँ हैं।।
हे तेगबहादुर बलधारी!
अब आप हमारी मदद करो।
श्रीराम बनो, श्रीकृष्ण बनो,
हे, दयासिंधु सन्ताप हरो।।

कश्मीर के उन दुखी हिन्दुओं की करुण कथा सुनकर गुरुतेगबहादुर को भारी हृदय वेदना हुई तथा वे विचार करने लगे कि अब क्या किया जाए? उनके सभी आनन्दपुर के साथी चुप थे। गुरु जी का प्रिय पुत्र जो लगभग 16 वर्ष की आयु का था, वह गुरु तेगबहादुर जी से कहने लगा, "हे पूज्य पिताजी! आप तो ईश्वर भक्त धर्मात्मा, वीर साहसी महापुरुष हैं, इसलिए सोच–समझकर इन दुखियों का कष्ट मिटाने का उपाय करो।" अपने प्रिय पुत्र गोविन्द राम की बात सुनकर गुरुतेगबहादुर तुरन्त बोल उठे कि प्रिय पुत्र! इस समय यहाँ आपसे बड़ा महा पुरुष और कौन है? आप ही धर्म रक्षा के लिए तैयार हो जाओ तथा इन ब्राह्मण का सकल संताप मिटाने की महान कृपा करे।

गुरु तेग बहादुर जी ने जब अपने पुत्र गोविन्द राम का देश धर्म रक्षा के लिए, जीवन न्योछावर करने की प्रेरणा का विचार सुनते ही लम्बी साँस खींच कर काश्मीर से आनेवाले ब्राह्मणों से गर्जते हुए कहा–

राम, कृष्ण, ऋषियों के प्यारे,
वंशज मेरी बात सुनो।
कभी सहन मैं नहीं करुँगा,
मुगलों का उत्पात सुनो।।
पापी औरंगज़ेब दुष्ट से,
जाकर तुम अब कह देना।
वैदिक धर्मी तेग बहादुर से
बातें तुम कर लेना।।
तेग बहादुर महावीर को पहले
यवन बना पापी।
हम भी पीछे बन जाएँगे,
हमें सता मत संतापी।।

सज्जनों! गुरु तेगबहादुर जी का धर्म रक्षा का उत्तर सुन कर सब दंग रह गए तथा कश्मीरी ब्राह्मण भी संतुष्ट होकर यहाँ से काश्मीर चल गए। उन्होंने औरंगज़ेब के आदमियों को साफ कह दिया कि पहले गुरु तेग बहादुर को आनन्दपुर जाकर मुसलमान बनाओ बाद में हमें बनाना। जब औरंगज़ेब के पास यह समाचार पहुँचा तो वह दंग रह गया तथा उसने अपने खास सैनिक भेजकर गुरु तेग बहादुर को दिल्ली बुलवा लिया। गुरु जी के तीन साथी मतीदास सन्त, सतीदास सन्त तथा दयालु भाई भी उनके साथ दिल्ली बुलवाए गए तथा चारों से मुसलमान बनने को कहा–

कान खोल कर सुन लो चारों,
मुसलमान बन जाओ तुम।
मौज उड़ाओगे जीवनभर,
व्यर्थ न समय गँवाओ तुम।।
जन्नत तुम्हें मिलेगी निश्चित,
जन्म सफल हो जाएगा।
हूरें गिलमें तुम्हें मिलेंगे,
कभी न कष्ट सताएगा।।
बात न मेरी मानोगे तो,
भारी कष्ट उठाओगे।
तड़प–तड़प कर मर जाओगे,
सजा मौत की पाओगे।।

औरंगज़ेब का फतवा सुनकर चारों ज़ोर से हँसे और औरंगजेब से कहने लगे–

औरंगज़ेब! ध्यान से सुन ले,
ईश्वर जग का स्वामी है।
जग निर्माता, जग पालक है,
संहारक वह नामी है।
वह ईश्वर है, वही गौड़ है,
वाहे गुरु कहलाता है।
कर्मों का फल देता सबको,
सच्चा भाग्य विधाता है।
मानव चोला, रत्न अगोला,
कर्मयोनि है जान अरे!
शुभ, कर्मों से मिलता है यह,
भला–बुरा, पहचान अरे।।
कर्मों का फल हे पागल!
रख याद अरे तू पाएगा।
घोर नरक में जाएगा तू,
भारी दुःख उठाएगा।।
काल बली है बड़ा भयंकर,
दौड़ा–दौड़ा आएगा।
तुझे पकड़ कर खा जाएगा,
कोई नहीं बचाएगा।।
ईश्वर की आज्ञा पालन कर,
काम भलाई के कर तू।
अपना जीवन सफल बना ले,
दुखियों की पीड़ा हर तू।।

जब औरंगज़ेब ने चारों सन्तों की ज्ञान भरी बातें सुनीं तो वह आग बबूला हो गया तथा उसने सबसे पहले सन्त मतीदास को आरे से चिरवाया। उस समय सन्त मतिदास गीता के श्लोक बोल रहा था। इसके बाद सन्त सतीदास को रुई में लपेटा गया तब सन्त सतीदास वाल्मीकि रामायण के श्लोकों का उच्चारण कर रहा था। इसके बाद दयालु भाई को पकड़ कर गर्म तेल के कड़ाहे में डाला गया, उस समय सन्त दयालु भाई वाहे गुरु, वाहे गुरु का उच्चारण कर रहा था। यह दृश्य देख कर गुरु तेग बहादुर मुस्करा रहे थे व वेद मंत्रों का जाप कर रहे थे। यह देख कर औरंगज़ेब भारी क्रोधित हो गया। उसने जल्लादों को गुरुतेग बहादुर का सिर धड़ से अलग करने का हुकम दिया तथा जल्लादों ने दिल्ली लाल किले मैदान में हज़ारों व्यक्तियों के सामने (चाँदनी चौक) में गायत्री मंत्र का पाठ करते हुए महान ईश्वर भक्त धर्मात्मा गुरु तेग बहादुर महाराज का पीपल के वृक्ष के नीचे तलवार से सिर काट कर महान धर्म शहीदों, महावीरों की कोटि में नाम अंकित करा दिया। वे अमर हो गए। जब तक सूरज, चाँद, तारे व पृथ्वी रहेगी तब तक गुरु तेग बहादुर महाराज, सन्त सतीदास, सन्त मतीदास तथा सन्त दयालु भाई का नाम अमर रहेगा। प्रभु ऐसे धर्मात्मा सन्त यहाँ लाखों भेजे, प्रभु से यही प्रार्थना है। हे प्रभो–

कृपा आर्यवर्त पर, करिये दया निधान।
तेग बहादुर से यहाँ, भेजो सन्त महान।।

सज्जनों! उनके शीश को जब भाई जेठा जी पंजाब लेकर आ रहा था तब गढ़ी कुशाला (गढ़ खालसा) सोनीपत में मुगल सेना ने घेर लिया तब इस ग्राम के गुरु के अनन्य सेवक भाई कुशाल सिंह दहिया ने अपने शीश को पुत्र द्वारा मुगल सेना को सौंप दिया तथा भाई जेठा जी मुगल सेना को चकमा देकर शीश को लेकर तरावड़ी अम्बाला होते हुए श्री आनन्द पुर साहिब आ गए। उनके अंतिम संस्कार लक्खीशाह बंजारा जो इस समय के विश्व के अमीर लोगों में गिने जाते थे। उन्होने अपने घर रायसीना में गुरु तेग बहादुर जी के

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

आर्यसमाज दिग्दर्शन

● भद्रसेन

'जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्यसमाज' के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरी नहीं–इस समाज को यथावत् सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है एक का नहीं।"

–महर्षि दयानन्द

आर्य प्रादेशिक सभा के अधिकारियों को लेखक ने सुझाव दिया कि आर्यसमाज स्थापना के एक सौ पचास वर्ष पूर्णता के उपलक्ष्य में दिल्ली की जो–जो आर्य समाजें विशेष साप्ताहिक अधिवेशन करना चाहें उनमें भाषण कराया जाए जिनमें आर्यसमाज का इतिहास, दूसरे संगठनों से अन्तर, आर्यसमाज के मूल विचार, सिद्धान्त, मान्यताएँ संक्षेप में बताई जाएँ। इसके पश्चात् किसी स्कूल–कॉलेज में सामूहिक दो दिन का समारोह हो जिसमें जनता से प्रश्न माँगकर उनके उत्तर दिए जाएँ। इन्ही भावनाओं को सामने रखकर यह अग्रिम विवेचना रचना प्रस्तुत है।

एक दिन बी.ए. के कुछ छात्र बैठे हुए थे। बातों–बातों में अजितेश ने साथियों से कहा–"मैं दो दिन से देख रहा हूँ, कि सोमेश, वेद, विचार, आनन्द आदि आर्यसमाज जाते हैं।" तभी अमितेश ने कहा–देखो ! सोमेश इधर ही आ रहा है अतः उससे ही पूछते है। सबकी अपनी ओर प्रश्न भरी (प्रश्नमयी) आँखें देखकर सोमेश ने साथियों से पूछा, क्या बात है ? पूर्व प्रसंग सामने आने पर सोमेश ने बताया–आजकल अभी पढ़ाई का कोई दबाव नहीं है अतः इस नए नगर के दर्शनार्थ हम कई बार निकल पड़ते हैं। जैसे कि आप जानते हैं, कि हम भारत के दक्षिण भाग के वासी हैं। हमारे पिता जी तो अपनी नौकरी के कारण स्थानान्तरणवशात कई बार उत्तर भारत में आते रहते हैं, पर शिक्षा के व्यवधान को देखते हुए परिवार उधर ही रहता है।

जमा दो कक्षा उत्तीर्ण होने पर, बी.ए. की जब बात चली, तो मैंने अपना विचार रखा, कि मैं यह काम भारत (उत्तर भारत) में ही रह कर क्यों न करूँ ? इससे पिता जी के भी समीप रहूँगा और उत्तर भारत का भी कुछ अनुभव हो जाएगा। मुझे दूसरे प्रान्तों से आए वेद आदि का परिचय पिता जी के माध्यम से हुआ। इस नगर में भ्रमण करते हुए हमें बाजार, कारखाने तो अपने प्रान्त जैसे ही लगे। मन्दिरों की व्यवस्था में भी बहुत कम ही अन्तर अनुभव में आया। हाँ, अपने प्रान्त में एक–दो बार गुरुद्वारे भी देखे थे और यहाँ भी दो बार गुरुद्वारे ही आये हैं। अपने यहाँ से भिन्न इस नगर में एक नई चीज़ देखी, कि एक जगह आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली है। हम उसको देखकर रुक गए और मन्दिर की भावना के अनुरूप उसके अन्दर प्रविष्ट हुए।

मन्त्री जी आने वाले हैं, क्योंकि आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली में विशेष आयोजन पर आज से, कथा प्रारम्भ हो रही है और इसी दृष्टि से यहाँ सायंकाल का अग्निहोत्र होगा। हाँ, आइए ! तब तक आपका परिचय कथा के प्रवक्ता से करा दूँ, सभी मिलकर प्राध्यापक जी के कक्ष में गए। अभिवादन तथा परिचय के पश्चात् युवकों ने प्रसंगवश कुछ जिज्ञासाएँ प्रकट कीं। इतने में मन्त्री मनोहर लाल जी ने आकर कहा–अब सत्संग का समय हो गया है, अतः आइए ! यज्ञ आरम्भ करते हैं। यज्ञ के अनन्तर सभी सत्संग भवन में यथास्थान आकर बैठ गए।

प्रथम सत्संग

सर्वप्रथम अजय के साथ मिल कर सभी ने एक सामूहिक गीत गाया।

पितु मातु सहायक स्वामी सखा,
तुम ही एक नाथ हमारे हो।
जिनके कछु और आधार नहीं,
तिनके तुम ही रखवारे हो।।
सब भाँति सदा सुखदायक हो,
दुःख दुर्गुण नाशनहारे हो।।
प्रतिपाल करो सगरे जग में,
अतिशय करुणा उर धारे हो।।
भूलि हैं हम ही तुम को तुम तो,
हमरी सुधि नांहि बिसारे हो।।
उपकारन को कुछ अन्त नहीं,
छिन ही छिन जो विस्तारे हो।।
महाराज महा महिमा तुम्हरी,
समुझे बिरले बुधवारे हो।।
शुभ शान्ति–निकेतन प्रेमनिधे,
मन–मन्दिर के उजियारे हो।।
यही जीवन के तुम जीवन हो,
इन प्राणन के तुम प्यारे हो।।
तुम सो प्रभु पाय 'प्रताप' हरि,
केहि के अब और सहारे हो।।

गीत के अनन्तर मन्त्री जी ने निवेदन किया, कि 'आर्य समाज, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली' में यह आयोजन हो रहा है। आर्यसमाज के सम्बन्ध में यह सारी चर्चा प्रश्न–उत्तर के रूप में होगी और यहाँ प्रश्नकर्त्ता के रूप में नाम उन सज्जनों के दिए गए हैं, जिन्होंने आर्यसमाज के इतिहास में योगदान दिया है (और इस आर्यसमाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली) के निर्माण, संचालन तथा विकास में सहयोग दिया है। अब प्राध्यापक महोदय से प्रार्थना है, कि इस कथा का शुभारम्भ करें। हाँ, प्राध्यापक महोदय से प्रार्थना है कि इस कथा का प्रारंभ करें कुछ प्रश्न नवागन्तुकों की जिज्ञासाओं से सामने आए हैं और भी जो सज्जन इस सम्बन्ध में जिज्ञासा रखते हैं या आगे कथा में अब जिज्ञासा उभरे तब वे भी प्राध्यापक जी को अपने प्रश्न दे दें। तब प्राध्यापक जी मंच पर विराजे और सस्वर मन्त्र–गान के पश्चात् उन्होंने कहा–हम आज यहाँ 'आर्यसमाज मन्दिर मार्ग' के विशेष आयोजन पर एकत्रित हुए हैं अतः आइए ! आर्यसमाज के इतिहास और विचारों पर एक दृष्टिपात करें। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि आर्यसमाज की स्थापना अपने प्रतिनिधि के रूप में महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत की महानगरी बम्बई में अपने कार्य को संगठित रूप में आगे बढ़ाने के लिए की थी अतः सबसे पहला प्रश्न यही उभरता है, **कि महर्षि दयानन्द कौन थे ?**

महर्षि जीवन गाथा–

भारत के गुजरात प्रान्त में एक टंकारा नाम का कस्बा है। वहाँ 1825 में मूलशंकर नाम का एक बालक उत्पन्न हुआ। उसका 13 वर्ष का बालपन दूसरे बच्चों की ही तरह बीता, चौदहवें वर्ष पिता जी ने मूल को कहा–कल शिवरात्री है, अतः शिवपुराण की कथा सुनने के लिए चलते हैं। मूल पिता जी के साथ वहाँ गया, कथावाचक ने शिव जी की वीरता की कई घटनाएँ सुनाई और शिवव्रत रखने की पद्धति तथा महिमा बताई। लौटते समय मूल ने अपने पिता जी से कहा–"इस बार मैं भी शिवरात्री का व्रत रखूँगा। व्रत वाली रात जब मूल ने चूहों को शिव पर अर्पित मिठाई, फल खाते हुए देखा, तो पिता जी को जगाकर पूछा, शिव जी इनको हटाते क्यों नहीं ? पिता जी ने मूल के प्रश्नों का उत्तर देते हुए प्रसंगवश कहा–सच्चे शिव तो कैलाश में रहते हैं। प्रश्नों के उत्तरों से सन्तुष्ट न होकर मूल ने पिता जी से घर जाने की आज्ञा ली और अपने मन में सच्चे शिव के दर्शन की प्रतिज्ञा करते हुए वह घर लौट आया। इसके दो वर्ष बाद मूल की बहन की मृत्यु हो गई, मूल के लिए मौत का यह पहला अनुभव था अतः गुम–सुम होकर वह सब कुछ देखता रहा। इसके दो वर्ष बाद मूल के चाचा की मृत्यु हो गई। चाचा जी मूल से बहुत अधिक प्यार करते थे अतः मूल को तब अनुभव हुआ कि किसी प्रिय की मृत्यु होने पर क्या स्थिति होती है ? मूल बहुत रोया, सब चुप कराते ही रह गए और इस घटना से मूल के मन में वैराग्य पैदा हुआ।

इसके कुछ दिनों बाद मूल ने पिता जी से कहा–मैं संस्कृत का विशेष अध्ययन करने के लिए काशी जाना चाहता हूँ। पर समीप की पाठशाला में पढ़ने का निर्णय हुआ और वहाँ मूल ने पढ़ना शुरू कर दिया। मूल अपनी पढ़ाई के साथ–साथ कभी–कभी एकान्त में गुरु जी के पास आता और पूछता, सच्चे शिव के दर्शन कैसे होते हैं ? और कभी पूछता मौत को कैसे जीता जा सकता है ? तब गुरु जी ने योगाभ्यास की बात तो बताकर टाल दिया, पर यह क्रम जब बार–बार चलने लगा, तो शिक्षक ने मूल के पिता को कहा–आपका बेटा कुछ अनोखे–अनोखे प्रश्न पूछता है, अतः अभी से इसका प्रबन्ध कर लो।

इस चेतावनी के बाद माता–पिता ने मूल को घर पर वापस बुला लिया और विवाह की तैयारियाँ शुरु कर दीं। मूल ने जब यह नया रूप रेखा, तो उसका अपना आपा एक–दम छटपटा उठा अतः घर छोड़ने का निश्चय करके एक दिन सायंकाल मूल ने जल का पात्र लिया और चल पड़ा। योग सिखाने वाले गुरु की खोज में मूल पहले शुद्ध चैतन्य ब्रह्मचारी और फिर दयानन्द संन्यासी बना। लगातार चौदह वर्ष मैदानों, नदियों, पहाड़ों की खाक छानी और जहाँ–कहीं पता चला कि अमुक स्थान पर विशेष विद्वान्, साधु, योगी, महात्मा रहता है, वहीं विनीत शिष्य बनकर पहुँचा। शास्त्र के नाम पर जिसने जो कुछ पढ़ाया, सो पढ़ा तथा योग नाम पर जिसने जो सिखाया वह सिखा। अन्त में दण्डी स्वामी विरजानन्द की कुटिया पर मथुरा में जा पहुँचा वहाँ लगभग तीन वर्ष अष्टाध्यायी, महाभाष्य का विशेष रूप से अध्ययन किया।

एक दिन किसी से कुछ लौंग लेकर गुरु चरणों में विदाई लेने के लिए दयानन्द पहुँचे और निवेदन किया कि अब सच्चे शिव दर्शन की साधना और मृत्यु पर विजय का पथ पकड़ में आया लगता है अतः मुझे इस पथ का पथिक बनने की आज्ञा दीजिए। यह सुनते ही गुरु विरजानन्द जी ने

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन बहुत प्रेरणायक रहा विश्व को सन्देश दिया, आर्यों में जागृति आई

● ओम प्रकाश आर्य

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन – 2025 दिनांक 30, 31 अक्टूबर व 1,2 नवम्बर को हर्षोल्लास के साथ सम्पन्न हुआ जिसमें विभिन्न देशों के आर्यों के साथ अपने देश के कोने–कोने से पधारे आर्यजनों ने अपनी गरिमामयी उपस्थिति से पूरे विश्व को यह दिखा दिया कि हम श्रेष्ठ लोगों का भी एक सशक्त संगठन है जो पूरे विश्व को सुख, शान्ति, आनन्द के मार्ग पर लाना चाहता है। माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी इस सम्मेलन के साक्षी रहे। इस चार दिवसीय सम्मेलन का मुख्य उद्देश्य **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** है।

अधिक व्यस्तता के कारण अपनी प्रतिक्रिया विलम्ब से प्रकट रहा हूँ। मैं सम्मेलन में चारों दिन उपस्थित रहा। मेरे साथ महर्षि दयानन्द छात्रावास रावतभाटा के दो छात्र, दो नए व्यक्ति तथा अन्य छह सदस्य और रहे। सबने इस अद्भुत प्रेरणादायक सम्मेलन में आकर गर्वानुभूति की। सम्मेलन में आकर ऐसा अनुभव हुआ मानो हम ज्ञान के सागरतट पर खड़े होकर प्रेरणा की लहरों का दर्शन कर रहे हों। हर पांडाल का हर कार्यक्रम सुनियोजित, सुव्यवस्थित, अनुशासित, नई ऊर्जा प्रदान करने वाला तथा दिशाबोधक था। नवागंतुकों ने अनुभव किया कि वास्तविक महाकुंभ यही है। जिधर दृष्टिपात करो उधर से ज्ञान के छीटें आत्मा को आनन्द से भर देते थे।

वाटरप्रूफ पांडाल (टेंट) में निःशुल्क आवास–व्यवस्था, विशाल टेंट में सुव्यवस्थित मय दरी भोजनव्यवस्था, पंक्तिबद्ध शौचालय व्यवस्था, विशाल वैदिक पुस्तक बाजार, सशुल्क भोजन–नाश्ता की भी व्यवस्था, पानी की सुविधा, सांस्कृतिक कार्यक्रम की मनोरम व्यवस्था, 11/11 कुंडीय यज्ञव्यवस्था अन्य विशाल यज्ञशाला व्यवस्था, गोसेवा प्रदर्शनी, मुख्य पांडाल का विशाल व भव्य रूप बैठने की सुन्दर व्यवस्था, विभिन्न प्रकार के सहायक व्यवस्थापन महर्षि के जीवन को प्रदर्शित करने वाले चित्र बैनर, आर्य समाज के विभिन्न मोटोज़, साज–सज्जा सब अद्वितीय थे। इतना बड़ा सम्मेलन करना ही अपने आप में महनीय कार्य है जो बहुत परिश्रम, लगन व त्याग से ही संभव हुआ। जगह–जगह ध्वनिविस्तारक यंत्र, स्क्रीन पर कार्यक्रम का दिखाया जाना अत्युत्तम था। इतना बड़ा सम्मेलन, किन्तु, स्वच्छता का विशेष प्रबन्ध प्रशंसनीय था। चहुँ ओर ध्वजा–पताकाएँ महर्षि दयानन्द और आर्य समाज का गुणगान कर रही थीं। आर्यों का अपने आप में अनुशासित रूप में आना–जाना–रहना आर्यसमाज से जुड़ने का साक्षात् उदाहरण प्रस्तुत कर रहे थे। आर्यों का यही तो आर्यत्व है। मैं ने 2006, 2012, 2018 में भी सम्मेलन में भाग लिया था। यह चौथे महासम्मेलन में भाग लेने का सुअवसर परमपिता परमात्मा ने दिया। यहाँ आकर वास्तव में असीम आनन्द की अनुभूति हुई। बहुत सफल, सार्थक, प्रेरणाप्रद, सन्देशपरक सम्मेलन रहा। जैसा नाम अन्तरर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन वैसा लगा भी। लोग जन्मस्थलीय महाकुंभ में धक्के खाकर, खाली हाथ आते हैं किन्तु यहाँ आर्यों के महासम्मेलन में बिना धक्का खाये, बिना कुछ गँवाए, ज्ञान की पोटली साथ में लेकर जाते हैं और अपने–अपने क्षेत्रों में उस ज्ञान का प्रचार–प्रसार करते हैं। सम्मेलन में बाल, युवा, वृद्ध, महिला, विद्यार्थी, ब्रह्मचारी, आर्य वीर, विद्वान्, उपदेशक, विदुषी, लेखक, कवि, संन्यासी, वानप्रस्थी सभी सम्मिलित हुए थे। विभिन्न प्रवेश द्वार आर्यों के बहुसंख्य में उपस्थित होने की सूचना दे रहे थे। ओ३म् ध्वज यह संकेत दे रहे थे कि दुनिया के लोगो ! वेद के मार्ग को अपनाओ, इसी में तुम्हारा कल्याण है, शान्ति का अन्य कोई मार्ग नहीं है। सत्यता भी यही है कि आज विश्व को वेदज्योति की आवश्यकता है।

इस सम्मेलन में आकर ऐसा अनुभव हुआ कि हम आर्य भी देश, समाज, विश्व के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। हम संख्या में भले ही अन्यों से कम हों, किन्तु हम गुणवत्तापूर्ण कार्य कर रहे हैं, हमारा श्रम, लगन, त्याग, तप, उत्साह व्यर्थ नहीं जाएगा, परमपिता परमात्मा उसे अवश्य पूर्ण करेंगे। हमें सकारात्मक दृष्टि से सम्मेलन का मूल्यांकन करना चाहिए नकारात्मक दृष्टि से नहीं। भीड़ में भी एक आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए, प्रतीक्षा में भी आनन्द आना चाहिए, पंक्ति में खड़े रहने में भी व्यायाम का अनुभव होना चाहिए। इसी प्रकार हर अभाव या कमी में सकारात्मक दृष्टि रखेंगे तो सर्वत्र आनन्द ही आनन्द है। हम आर्यदृष्टि से सम्मेलन को देखेंगे तो अन्तःकरण पवित्र होगा और आत्मा सन्तोष का अनुभव करेगा। आर्यों का एक स्थान पर इकट्ठा होना संगम है। यहाँ ज्ञान अर्जित करना, प्रेरणा लेना ही संगमस्नान है। जो व्यवस्थापक कार्यकर्त्ता यह सोच रहे हैं कि अगला सम्मेलन और सुपर बनाएँगे वे कोटि–कोटि धन्यवाद के पात्र हैं, आप लोगों के बल पर ही यह सम्मेलन पूर्णतः सफल हुआ। परमात्मा आप लोगों को सहस्रगुणा शक्ति प्रदान करें। बड़े–बड़े सम्मेलन ही हम आर्यों के तीर्थ हैं। ये जीवन को दिशा प्रदान करते हैं।

इस सम्मेलन में आकर ऐसा अनुभव हुआ कि हम आर्य भी देश, समाज, विश्व के लिए बहुत कुछ कर सकते हैं। हम संख्या में भले ही अन्यों से कम हों, किन्तु हम गुणवत्तापूर्ण कार्य कर रहे हैं, हमारा श्रम, लगन, त्याग, तप, उत्साह व्यर्थ नहीं जाएगा, परमपिता परमात्मा उसे अवश्य पूर्ण करेंगे। हमें सकारात्मक दृष्टि से सम्मेलन का मूल्यांकन करना चाहिए नकारात्मक दृष्टि से नहीं। भीड़ में भी एक आनन्द की अनुभूति होनी चाहिए, प्रतीक्षा में भी आनन्द आना चाहिए।

हमारे साथ सम्मेलन में श्री मुनेन्द्र सिंह गए थे। वे पहली बार ऐसे बड़े सम्मेलन में गए थे। मैंने उनसे पूछा, "सम्मेलन कैसा लगा?" उन्होंने बताया कि "पहले दिन तो थोड़ा अटपटा–सा लगा, पर बाद में जब आने लगा तब आने का मन ही नहीं करता था।" यह होता है ज्ञान का प्रभाव। जो प्रभावित हो गया, उसका जीवन सफल। एक सज्जन जो बिलकुल आर्य समाज से अनभिज्ञ थे, साथ गए थे, मैंने उनसे पूछा, "आपको सम्मेलन कैसा लगा?" उन्होंने बताया, "अब तक तो मैं अन्धकार में जी रहा था। प्रकाश मुझे अब मिला।" वे सज्जन थे राम चरण गौड़, वे बोले, "अब मैं राम चरण आर्य हूँ।" यह सम्मेलन का ही तो प्रभाव है। मेरे साथ दो छात्र भरत कटारा और गिरिराज गए थे। मैने उनसे पूछा, "आप दोनों को सम्मेलन कैसा लगा?" उन्होंने बताया, "हम इस सम्मेलन को जिन्दगी में भूल नहीं पाएँगे। बहुत ज्ञानवर्धक आनन्ददायक था।" ऐसे जाने कितने लोग स्मृतियाँ और प्रेरणा लेकर वहाँ से गए होंगे। विशाल पांडाल में एक साथ सोना, विशाल भोजनशाला में एक साथ भोजन करना, स्नानागार में एक साथ कइयों का स्नान करना, मुख्य पांडाल में एक साथ बैठकर प्रवचनादि सुनना एक दिव्यानुभूति कराता था जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द की अनुगूंज से कार्यक्रम स्थल स्वर्गिक छटा बिखेर रहा था। वहाँ पुरानों की पुनरावृत्ति और नयों को शिक्षा मिली। मौसम ने भी भरपूर सहयोग दिया।

सम्मेलन में चार दिन कैसे बीते, कुछ पता नहीं चला। घर आने पर वहाँ की सारी स्मृतियाँ मन में उतरती रहीं। रास्ते में कोटा के प्रभु सिंह, चन्द्रमोहन कुशवाहा, अरविन्द पाण्डेय, पी. सी. मित्तल व इन सबकी टीम, राकेश चड्ढा का सहयोग आनन्ददायक रहा। कर्नाटक के तुकाराम शेडोले का सम्मेलन में मिलना, हरीश आर्य धनघटा का प्रथम मिलन, जयपुर से नरदेव आर्य, हिमाचल प्रदेश से कमल आर्य का मिलन, ब्यावर से भजनोपदेशक अमर सिंह की भेंट, दिल्ली से गंगाशरण आर्य का मिलन, संत कबीर नगर से सन्तराम गुप्ता का मिलना, इन्दौर से सुखदेव शर्मा का चार दिवसीय सान्निध्य, देहरादून से प्रेम प्रकाश शर्मा का मिलन हृदयकमल को खिला गया। यदि यह सम्मेलन न होता तो आप सबसे कहाँ मुलाकात होती। कितने आर्य वैदिक पुस्तकों को क्रय करके अपने–अपने क्षेत्रों में ले गए, अवश्य ही वहाँ वेदज्ञान की ज्योति जलेगी।

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन–2025 पूर्णतः सफल रहा। विश्व को वैदिक सन्देश दिया। आर्यों की शक्ति–संगठन का पता चला। दुनिया को महर्षि दयानन्द के उद्घोष की आवश्यकता महसूस हुई। सम्मेलन ने यह सिद्ध कर दिया कि आर्य समाज का मशाल जल रहा है, वह आँधी, तूफान से बुझनेवाला नहीं है। इसका आन्दोलन दुनिया को श्रेष्ठ बनाना है। मानवमात्र को वेदज्ञान के रास्ते पर लाना है। विश्वकल्याण, विश्वबन्धुत्व, विश्वशान्ति का सन्देश इस महासम्मेलन के द्वारा दिया गया जो इस धरती के लिए बहुत आवश्यक है। ये सम्मेलन प्रत्येक देश में होने ही चाहिए। यह युग और विश्व की पुकार है।

आर्य समाज रावतभाटा
वाया कोटा (राज.) 323307

☞ पृष्ठ 06 का शेष

आर्यसमाज दिग्दर्शन

कहा–"मैंने इन लौंगों के लिए तो तुझे नहीं पढ़ाया था, मुझे ऐसी भौतिक चीज़ों की ज़रुरत नहीं है।" तब दयानन्द ने कहा मेरे पास इन माँगी हुई लौंगों के अतिरिक्त और देने के लिए है ही क्या ? तब बड़े विश्वास के साथ गुरु जी ने कहा–"दयानन्द तू युवा है, तेरे पास स्वस्थ शरीर है, तू शिक्षित और विचारशील है, तथा भावना भरा दिल रखता है। तू आँखे और दिमाग रखते हुए भी अपने चारों ओर क्या नहीं देखता कि जनता किस प्रकार अन्ध–विश्वास, रुढ़िवाद और अन्धकार में ठोकरें खा रही है ?" तब दयानन्द जी ने पूछा, "गुरुदेव ! मेरे लिए फिर क्या आज्ञा है ?" महर्षि गुरु विराजानन्द जी दण्डी ने अपने ह्रदय की भावनाओं को उण्डेलते हुए कहा–"दयानंद आर्षज्ञान के प्रकाश से सभी को सही राह दिखाओ" शिष्य ने बिना ननुनच के इस आज्ञा को शिरोधार्य किया और अन्तिम श्वास तक प्राणपन से निभाया।

स्वामी दयानन्द ने पहले सामान्य विचारों के प्रचार के साथ भारत के एक बड़े भूभाग की जनता समझा और भारतीय साहित्य का गहरा आलोडन किया। बहुत कुछ देखने, पढ़ने, सोचने के बाद ऋषि दयानन्द ने 1875 में आर्यसमाज की स्थापना की। जिससे आर्षज्ञान की ज्योति सदा जगमगाती रहे। हाँ, अब सोमेश की जिज्ञासा सुनिए।

सोमेश–हाँ, आपने बहुत सुन्दर ढंग से ऋषि जीवन का परिचय दिया है तथा बताया है कि उन्होंने एक विशेष उद्देश्य से आर्यसमाज की स्थापना की है। इस सम्बन्ध में और कोई जिज्ञासा प्रकट हो, अच्छा हो आप पहले यह बतायें कि आप ऋषि जीवन में क्या अनोखापन अनुभव करते हैं ?

प्राध्यापक–संसार के इतिहास की यह एक अपूर्व घटना है, कि एक पठित इक्कीस वर्षीय युवक लगातार चौदह वर्ष भटकने के बाद एक गुरु को प्राप्त करता है। वहाँ विशेष शिक्षा प्राप्त करके जब अपने पूर्व संकल्प को साधने के लिए विदा माँगता है, तो गुरुदेव उसके जीवन का काँटा ही बदल देते हैं। एतदर्थ अपनी योगसाधना को भी गौण करके महर्षि दयानन्द सर्वात्मना जनता जनार्दन को सत्पथ दर्शाने में जुट जाते हैं। आर्षज्ञान की ज्योति को सदा प्रज्वलित रखने के लिए जहाँ आर्यसमाज की स्थापना की, वहाँ महर्षि ने सत्यार्थप्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, वेदभाष्य आदि बड़े–छोटे बीस ग्रन्थ भी लिखे।

संकेत प्राप्त करके विश्वेश्वर ने पूछा, आपकी दृष्टि से आर्यसमाज की विचारधारा का सबसे बड़ा लाभ क्या है ?

प्राध्यापक–इसको एक छोटे से वाक्य में कहना हो तो कह सकते हैं कि उलझाव से बचाव।

नित्येश–किस–किस उलझाव से आप बचाव समझते है ?

प्राध्यापक–जीवन के हर क्षेत्र के उलझाव से यहाँ बचाव है। अगर कुछ के नाम ही गिनाने की बात हो, तो मैं कहूँगा, कि ईश्वर, धर्म, मानव जाति, महापुरुष, तीर्थ, पर्व, व्रत, मन्त्र, योग आदि, क्योंकि हर एक के भेदों का कोई अन्त नहीं। इन सबका एक सरल–सीधा स्पष्ट–सा रूप यहाँ हाथ लग जाता है। तब व्यक्ति असम्बद्ध फैलाव में नहीं पड़ता और न ही 'पत्तों को पानी' देने जैसा निरर्थक श्रम होता है। जैसे कि प्रातः उठते ही दिन, तिथि, राशि, दिशा के शुभ–अशुभ के विचार सामने आते हैं।

अमितेश–हाँ, आपने बचाव की बात की हैं और उसको स्पष्ट करते करते हुए, शकुन–अपशकुन, मुहूर्त विचार का दृष्टान्त दिया है। इसी प्रकार अन्य अनेक बातों में बचाव का निर्देश किया है। हाँ, चमत्कारों के सम्बन्ध में ऋषि जी की क्या धारणा है ?

प्राध्यापक–देखो ! आज हमारे समाज में ईश्वर भक्ति, जप–तप, मन्त्र–तन्त्र, यज्ञ– योग, व्रत–तीर्थ आदि से प्राप्त होने वाले अनेक तरह के चमत्कारों की सर्वत्र चर्चा होती रहती हैं। ऋषि ने इस सम्बन्ध में सबसे पहले इस बात की ओर सबका ध्यान आकर्षित किया है, कि व्यवहार में ऐसा कहीं भी सामने नहीं आता जैसे कि शीतला माता, सिरडी वाले साई बाबा जैसे धार्मिक चलचित्रों के द्वारा भक्ति मात्र से ही हर सिद्धि की प्राप्ति का दावा किया जाता है।

हाँ, जब कोई इस प्रकार के चमत्कार पर विश्वास करता है तो इसका पहला परिणाम यही होता है कि वह उस–उस वस्तु को प्राप्त करने के लिए अन्य प्रयास नहीं करता। उस–उस व्यावहारिक प्रयास के न करने पर उसको विद्या, धन आदि प्राप्त नहीं होते और तब वह उसी धोखे में रह जाता है जैसे कि जब कोई यह विश्वास करता है कि अमुक मन्त्र की सिद्धि से विद्या प्राप्त हो जाती है, तो वह पढ़ने के स्थान पर मन्त्र सिद्धि में ही लग जाता है। इस स्थिति को स्पष्ट करने वाला महाभारत में एक बड़ा सुन्दर कथानक आता है। भारद्वाज का पुत्र यवक्रीत विद्या अध्ययन के लिए पढ़ने के अभ्यास को छोड़ करके तप करने लगा। तब इन्द्र ने कहा–"यवक्रीत ! पढ़े बिना विद्या नहीं आ सकती। तू अमार्ग पर चलकर लक्ष्य पर पहुँचना चाहता हैं, सो यह ठीक नहीं, इसलिए गुरु के पास जाकर विद्या पढ़। इतने पर भी यवक्रीत नहीं माना, तब इन्द्र ने यवक्रीत के सामने ही गंगा में रेत फेंकना शुरु कर दिया। यह देखकर यवक्रीत हँसता हुआ बोला कि आप यह क्या कर रहे हैं ? इन्द्र ने उत्तर दिया कि लोक हितार्थ पुल बाँध रहा हूँ। यह सुनकर यवक्रीत ने कहा–"बालू से पुल बाँधना सर्वथा असम्भव है, इसलिए आप इस अशक्य (न हो सकने योग्य) कार्य को छोड़कर हो सकने योग्य कार्य को करें तो अच्छा रहे।" *क्रमशः*

182 शालीमार नगर,
होशियारपुर 146001

☞ पृष्ठ 03 का शेष

शोलापुर में सम्मेलन

चरितार्थ हो गई–

हम अकेले ही चले थे जानिबे–मंज़िल मगर
हम सफर आते गए और कारवां बनता गया।।

यह कारवां इतना उग्र रूप धारण कर लेगा इसकी किसी को कल्पना नहीं थी। उस सत्याग्रह में कैदियों को किस प्रकार की कठिनाइयों से गुज़रना पड़ा, उसकी एक झलक पिछले पृष्ठों में मिलेगी जिसमें लेखक ने अपने जत्थे की आपबीती लिखी है। इस सत्याग्रह में केवल आर्यसमाजियों ने नहीं बल्कि, देश के सभी वर्गों के लोगों ने हिस्सा लिया। कई सिख और मुसलमान बंधु भी सत्याग्रह में शामिल हुए। पहले काँग्रेसी नेताओं को यह विश्वास नहीं था कि आन्दोलन अहिंसात्मक और शांतिपूर्ण रह सकेगा। देश में साम्प्रदायिकता के उभरने की आशंका से ही उन्होंने स्टेट काँग्रेस को सत्याग्रह बन्द करने का परामर्श दिया था परन्तु आर्यसमाज के चिन्तन में कभी साम्प्रदायिकता का स्थान नहीं रहा। उसने सदा मानव मात्र को एक ही परमपिता की सन्तान के नाते भाई–भाई माना है। पर अन्याय, असत्य और अत्याचार का आश्रय लेने वाले भाई का विरोध करने को भी उसने धर्म का अंग ही माना है।

काँग्रेसी नेताओं की सम्मतियाँ

कुछ काँग्रेसी नेताओं की सम्मतियाँ देखिए।

सत्याग्रह की समाप्ति पर महात्मा गाँधी ने लिखा–

"आर्यसत्याग्रह का अन्त मीठा हुआ। मैंने अब तक इस धर्मयुद्ध के विषय में मौन धारण कर रखा था। उसका कारण यह था कि इस सम्बन्ध में मैं मौलाना अब्दुल कलाम आज़ाद के मशविरे पर चल रहा था। पर आर्य नेताओं और मुसलमान मित्रों से मेरा विचार विनिमय होता रहता था। आर्यसमाज की माँगों के प्रति मेरी सहानुभूति थी। ये माँगें जन्मसिद्ध अधिकारों के रूप में थीं। अब निजाम सरकार अपनी विज्ञप्ति में घोषित भावनाओं के अनुसार काम करेगी तो धार्मिक व सांस्कृतिक स्वतन्त्रता के सम्बन्ध में पुनः झगड़ा आरम्भ होने का कोई कारण नहीं रहेगा।"

पं. जवाहरलाल नेहरु ने लिखा था–

"कई राजनैतिक कारणों को लेकर बहुत से लोगों ने हैदराबाद सत्याग्रह का विरोध किया था पर हमने यह ठीक ही कहा था कि धार्मिक स्वतन्त्रता का उद्देश्य सही उद्देश्य है। आर्यसमाजियों की शिकायतें सच्ची हैं और उन्हें दूर कराने की इच्छा साम्प्रदायिक नहीं है। काँग्रेस ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कभी निज़ाम सरकार की निरंकुशता का समर्थन नहीं किया। ऐसे दुःखद काण्ड के संतोषपूर्ण हल पर आर्यसमाज और निजाम दोनों धन्यवाद के पात्र हैं।"

डॉ. राजेन्द्रप्रसाद ने लिखा–

"हैदराबाद के आर्यसमाजियों और हिन्दुओं की शिकायतें ठीक हैं और उनको दूर करने का आन्दोलन भी ठीक है। कोई काँग्रेसी आर्यसमाजी आन्दोलन में सम्मिलित होता है तो इसमें मुझे आक्षेप योग्य कोई बात नहीं दिखाई देती।..... आर्यसमाज को अपने त्याग, कार्यदक्षता और संयम के लिए और हैदराबाद राज्य को उनकी न्यायोचित माँगें मानने के लिए बधाई।"

आचार्य कृपलानी ने लिखा–

"हरएक काँग्रेसी यह मानता है कि हैदराबाद रियासत में आर्यसमाज पर लगाए गए प्रतिबन्ध आवांछनीय हैं और उनका प्रतिकार होना चाहिए। आर्यसमाजियों की माँगें निजाम सरकार के विरुद्ध हैं, मुसलमानों के विरुद्ध नहीं। मुझे इसमें ज़रा भी सन्देह नहीं है कि प्रत्येक आर्यसमाजी काँग्रेसमैन को व्यक्तिगत रूप से धार्मिक स्वतन्त्रता की रक्षा के संघर्ष में शामिल होने का पूरा अधिकार है।"

'पं. क्षितीश वेदालंकार ग्रन्थावली' से साभार

☞ पृष्ठ 02 का शेष

प्रभु-भक्ति

होगा और मनुष्य तपस्वी जीवन रखते हुए जब तक चाहे इस सुख के चक्र को अपने सामने रखता है। दुःखी मनुष्य निर्बलात्मा और सुखी सदैव सबलात्मा हुआ करता है।

चौथा साधन–

स्वाध्याय चौथा साधन है। उत्तम ग्रन्थों के अध्ययन से मनुष्य के विचार विशाल हुआ करते हैं और तंगदिली और संकोच के संकुचित क्षेत्र से वह बाहर हो जाया करता है। संकोच से आत्मा में ग्लानि और उदारता से आत्मा आह्लादित हुआ करता है। ऐसे ग्रन्थ, जो मनुष्यों की रुचि बिगाड़ने और उनमें कुवासना और कुरुचि पैदा करने वाले हैं, कभी नहीं पढ़ने चाहियें। **उत्तम पुरुषों और महान् व्यक्तियों के जीवन चरित्र और धार्मिक तथा आचारिक जीवन का दर्जा ऊँचा करनेवाले ग्रन्थ ही स्वाध्याय के ग्रन्थ हो सकते हैं।**

पाँचवाँ साधन–

उत्कृष्ट सेवा के भावों का मनुष्य के हृदय में उत्पन्न हो जाना पाँचवाँ साधन है। सेवा से मनुष्य का हृदय विशाल होता है और उसके भीतर निरभिमानता आती है। सेवा से केवल सेवक ही का उपकार नहीं होता; किन्तु जिसकी सेवा करते हैं, उसका भी भला हुआ करता है। मान लो, तुम्हारे पड़ोस में एक व्यक्ति रहता है, जिसमें चोरी करने की कुटेव आ गई है, तो तुम किस प्रकार उसका सुधार कर सकते हो ? यदि तुम उसे बार–बार चोर कहकर लज्जित करना चाहते हो और चाहते हो कि इससे उसका सुधार हो जाए तो यह सम्भव नहीं। तुम्हारे बार–बार के चिढ़ाने से खीझकर वह एक दिन कह देगा कि अच्छा मैं चोर हूँ, तुम जो कुछ करना चाहते हो करो। अब वह निर्लज्ज हो गया; अब उसे चोर कहे जाने की लज्जा बाकी नहीं रही। किसी भी पतित व्यक्ति का सुधार उसके अवगुणों को बार–बार दुहराकर चिढ़ाने से नहीं हुआ करता। सुधार का मार्ग दूसरा है। उसका अवलम्बन करने ही से सफलता मिला करती है। तुम किसी व्यक्ति में जो अवगुण है, उसका ज़िक्र भी न करो; किन्तु यत्न करो कि उसके दुःख–सुख और विशेषकर दुःख में सहायक बनो, ऐसा दो–चार बार करने से वह तुमसे इतना प्रभावित और तुम्हारा इतना कृतज्ञ होगा कि बिना तुम्हारे कहे, स्वयमेव अपने अवगुणों को छोड़ देगा।

सेवा का एक उदाहरण–

बंगाल में भक्तिमार्ग के प्रचारक चैतन्य के जीवन की एक घटना बड़ी शिक्षाप्रद है। चैतन्य एक समय अपने कुछ शिष्य और अनुयायियों के साथ बंगाल के एक नगर में गये और एक वाटिका में अपना आसन जमाया। नगर के लोग उनके दर्शनार्थ आने लगे। उन्होंने, इन आगंतुकों में अधिकांश से एक प्रश्न किया और वह यह था कि तुम्हारे नगर में सबसे अधिक खराब आदमी कौन है ? प्रत्येक ने उत्तर दिया कि मघाई नाम का एक व्यक्ति उनके नगर में, सबसे अधिक बुरा और प्रायः सभी के लिए कष्टों का कारण है। चैतन्य ने अपने दो शिष्यों को भेजा कि जाओ मघाई को बुला लाओ। दोनों शिष्य मघाई के पास पहुँचे। वह उस समय अपने किसी मित्र के साथ बैठा हुआ शराब पी रहा था। जब शिष्य ने गुरु का सन्देश उसे दिया तो उसने एक खाली बोतल उसके सिर में दे मारी। सिर में ज़ख्म हो गया और खून निकलने लगा। शिष्यों ने गुरु के पास जाकर घटित घटना सुना दी। गुरु ने अपने आठ–दस शिष्यों को भेजा कि जाओ और यदि मघाई खुशी से न आये तो उसे पकड़कर ले आओ। इस प्रकार पकड़ा हुआ मधाई चैतन्य के समीप पहुँचा। चैतन्य ने एक गुदगुदा फ़र्श बिछवा रखा था। मधाई उसी फ़र्श पर लिटाया गया। वह सोच रहा था कि उसे दण्ड मिलेगा परन्तु देखता क्या है कि चैतन्य आकर उसके पैरों के पास बैठ गये और उन्होंने अपने हाथ उसके पैरों पर इस प्रकार रखे जैसे कोई किसी के पाँव दबाता है। मघाई घबराकर उठ बैठा। उसका हृदय उलट–पलट हो गया और वह चैतन्य के हाथों को पैर से हटाकर घबराये हुए दिल और तर आँखों से चैतन्य से कहने लगा कि 'महाराज ! मैं बड़ा पातकी हूँ। मैंने अनेक अपराध किये हैं, आपने क्यों अपने पवित्र हाथों को मेरे शरीर से लगाकर अपवित्र किया ?" अब यह मधाई पहला मघाई नहीं रहा था। अब उसके भीतर आत्मग्लानि पैदा हो चुकी थी और वह अपने दुष्कृत्यों से घृणा करने लगा था। अधिक कहने की ज़रुरत नहीं, चैतन्य का जीवन–चरित्र बतलाता है कि मघाई उनके शिष्यों में सर्वश्रेष्ठ शिष्य बन गया। यह सब चैतन्य के सेवाभाव का फल था।

अस्तु, इन उपर्युक्त पाँच बातों पर अमल करने से मनुष्य का आत्मा बलवान् बन जाया करता है। निष्कर्ष यह है कि मनुष्य पहले तीनों प्रकार के कर्त्तव्यों को करके श्रेष्ठ मनुष्य बन जाता है, और इन अन्त में वर्णित पाँच बातों पर अमल करके अपने आत्मा को भी बलवान् बना लिया करता है। तभी उसके भीतर उच्च आस्तिकता के भाव जागृत होते हैं और तभी वह ईश्वरोपासना की ओर रुजू होकर भक्ति मार्ग का पथिक बना रहता है। हाँ. उसी भक्ति का, जिसके प्रचार के उद्देश्य से यह ग्रन्थ लिखा गया है और जिसके लिए ये पंक्तियाँ लिखी जा रही हैं।

दैनिक 'मिलाप' लाहौर के स्वामी और 'आर्य्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा लाहौर' के प्रधान लाला खुशहालचन्द जी इस समय मेरे साथ सैण्ट्रल जेल गुलबर्गा (हैदराबाद) में हैं। जो उन्हें, और उनके परिवार को जानता है, वह यह बात अच्छी तरह जानता है कि लाला जी तथा उनका परिवार कैसा उच्च श्रेणी का विशुद्ध आर्य्य जीवन रखता है। लाला खुशहालचन्द जी के लिए भक्ति–मार्ग सब–कुछ है और इसलिए उन्होंने जेल के अवकाश के समय का सदुपयोग करते हुए भक्ति पर यह ग्रन्थ लिखा। कई बार यहाँ जेल की प्रतिकूलताओं के कारण उनका स्वास्थ्य भी खराब रहा, और भी अनेक प्रकार के कष्ट उठाने पड़े परन्तु फिर भी भक्ति के प्रेम से, उन्होंने ग्रन्थ का लिखना नहीं छोड़ा। पुस्तक की भाषा उत्तम, सरल और हृदयग्राही है। इसमें सभी विषयों का इस प्रकार वर्णन किया गया है कि उससे प्रत्येक कम–से–कम शिक्षा रखनेवाला व्यक्ति भी लाभ उठा सके। उनकी लिखी अपनी राम–कहानी से साफ प्रकट होता है कि उन्होंने जिस मार्ग का आश्रय लिया वह उनके लिए कितना शान्तिप्रद सिद्ध हुआ। इसीलिए उन्होंने यह आवश्यक समझा कि अनेक बहनों और भाइयों को भी इससे लाभ उठाने का अवसर दें। पुस्तक पर सरसरी निगाह डालने से भी इसकी उपयोगिता प्रकट हो जाती है।

भक्ति की विधि, मन के निग्रह के साधन, संकल्प, संस्कार और स्वाध्याय आदि अनेक उपयोगी विषयों पर पुस्तक में प्रकाश डाला गया है। पुस्तक का वह भाग, जिसमें दिखलाया गया है कि कौन लोग भक्ति से वंचित रहते हैं, पाठकों के लिए विशेष ध्यान देने के योग्य है।

यह विश्वास है कि पुस्तक जिस सदुद्देश्य से लिखी गई है, पाठकगण उसका ध्यान रखते हुए अधिक–से–अधिक, इससे लाभ उठाने का प्रयत्न करेंगे। पुस्तक वास्तव में प्रचार–योग्य है। इन्हीं कुछेक शब्दों के साथ पुस्तक पाठक के सम्मुख रखी जाती है।

फिल्टर बेड, गुलबर्गा 27 मई, 1936

–नारायण स्वामी

क्रमशः

☞ पृष्ठ 05 का शेष

मानवता के सच्चे ...

धड़ पर रखकर अग्नि देवता को वैदिक रीति द्वारा अर्पित कर दिया। ध्यान रहे धड़ को वे पहले ही ले आए थे।

प्रिय सज्जनों! जिस जगह चाँदनी चौक, दिल्ली में गुरु द्वारा शीश गंज है, इसी स्थान पर पीपल का वह पेड़ था जहाँ गुरु तेग बहादुर संध्या कर रहे थे तथा जहाँ उनका बलिदान हुआ था। शीशगंज गुरुद्वारा उनकी अमर गाथाओं को भी गा रहा है। मैंने सन् 1960 ईश्वी में उस पीपल का वह टहना भी शीशगंज गुरुद्वारा में रखा देखा था। मैंने वहाँ गुरुद्वारा द्वारा बाँटा गया प्रसाद भी खाया था।

वास्तव में धन्य थे वे महापुरुष जिनकी कुरबानियों की बदौलत ही हमारा प्यारा वैदिक धर्म, वैदिक सभ्यता–संस्कृति बची हुई है। आज देश की दशा (स्थिति) बहुत खराब है। सर्वत्र नंगा नाच हो रहा है। युवक युवतियाँ पश्चिमी सभ्यता–संस्कृति की नकल करने में लगे हुए हैं। नशाखोरी, मांसाहार, उग्रवाद आतंकवाद, भ्रष्टाचार का भारी ज़ोर है इसलिए भारत के युवको और युवतियो अब जागो, कुछ करो, अपने प्यारे देश को बचाओ। अतः अपना कर्त्तव्य निभाओ–

भारत माँ के प्रिय सपूतों,
देश भक्त बलवान बनो तुम।
सदाचार अपनाओ प्यारो,
भारत माँ की शान बनो तुम।।
चरित्रवान ईमानदार बन,
अपना जीवन सफल बनाओ।
तेगबहादुर से योद्धा बन,
दुनियाँ भर में आदर पाओ
भारत माँ की सभी बेटियो,
सीता, सावित्री बन जाओ।
सती–साध्वी, वीरांगणा बन,
सर्व विश्व में नाम कमाओ।।
बनो जानकी जैसी माता,
जग में नाम करो तुम अपना।
भारत को चमका दो जग में,
सन्त जनों का यह था सपना।।

आर्य सदन बहीन जनपद–पलवल (हरियाणा)
मो. 9813845774

पत्र/कविता

डॉ. स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

आर्य जगत् में सर्वाधिक लेखन का अपने पिताजी का रिकार्ड तोड़ने वाले वैज्ञानिक परिव्राजक स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती का जन्म 24 अगस्त (श्री कृष्ण जन्माष्टमी) 1905 ई. को बिजनौर में आर्यसमाज में प्रख्यात मनीषी, विचारक तथा दार्शनिक पं. श्री गंगाप्रसाद उपाध्याय के ज्येष्ठ पुत्र के रूप में हुआ। 1927 ई. में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से रसायनविज्ञान में एम. एस. सी. तथा 1930 में डी. एस. सी की उपाधि प्राप्तकरे आप वहीं प्राध्यापक हो गये। 1967 में रसायनविभाग से आचार्य एवं अध्यक्ष के रूप में सेवानिवृत्ति के पश्चात् भी संन्यास लेने तक आपने रिसर्च प्रोफेसर के रूप में कार्य किया। 1971 ई. में संन्यास लेकर वैज्ञानिक परिव्राजक बनकर निरन्तर भारत में तथा विदेशों में भी 17 बार वैदिकधर्म के प्रचारार्थ यात्राएँ कीं। 1942 ई. के स्वातन्त्र्य समर में भी आपने कारावास के कष्ट सहे। वैज्ञानिक, वैदिक तथा दार्शनिक साहित्य की सर्जना का सुविस्तृत आयाम आपकी रचनाओं में देखने को मिलता है। चारों वेदों के 22 खण्डों में अंग्रेज़ी अनुवाद के अतिरिक्त प्राचीनकालीन भारतीय वैज्ञानिक उपलब्धियों पर प्रामाणिक लेखन के लिए आप सुप्रसिद्ध हैं। आपके द्वारा लिखित पुस्तकों की संख्या सैकड़ों में है, अथ च लिखित और सम्पादित पुस्तकों की पृष्ठ संख्या एक लाख से भी अधिक है। 90 वर्ष की आयु में 18 जनवरी 1995 को आपका देहान्त आपके प्रिय शिष्य पं. दीनानाथ शास्त्री के आवास एच. ए. एल. कोरबा, अमेठी में हो गया। लेखनी के महाधनी, विद्वता की मूर्ति, वैदिक धर्म प्रचार के प्रखर पुरोधा स्वामीजी की कीर्ति अक्षय और अमर है। मैं (लेखक) स्वामी सत्यप्रकाश जी का बीएससी का छात्र था।

स्वामी गुरुकुलानन्द 'कच्वारहारी'
पिथौरागढ़ (उत्तराखण्ड)
'इतिहास के बिखरे पन्ने' से साभार

****

आरती उतारा करते हैं

सुख–सेज स्वयं ठुकराकर हम काँटों से गुज़ारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
सिंहों के पकड़ जबड़े हम तो दाँतों को गिना करते हैं सदा।
अंगारों को खा–खा करके हँस–हँस के स्वयं मरते हैं सदा।।

अपने हाथों से मौत–दुल्हन की माँग सँवारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
हम बैठ किनारों पे न सदा लहरों का हिसाब लगाते हैं।
पतवार बिना, नौका खेते बंजर में फूल उगाते हैं।।

छाती पे चढ़के समुन्दर की भँवरों को पुकारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
छोटा न बड़ा कोई हममें सब पक्षी हैं इक डाली के।
मंजिल है एक डगर अनगिन सब फूल एक ही माली के।।

आँसू को हथेली पे रखके मोती सा दुलारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
जो दानव हैं हम उनके लिए दुर्गा के तेज दुधारे हैं।
दुश्म के लिए दावानल हैं, विष हैं जलते अंगारे हैं।।

प्रेमी के लिए पथ को हरदम पलकों से बुहारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
अरिमुंडों की माला माँ को हम भेंट सदा करते आये।
जीने के लिए हँस–हँस के सदा बालकपन से मरते आये।।
शोणित को समझ गंगाजल हम चरणों को पखारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
हर बात निभाते हैं अपनी, प्यासों को सुधा पिला करके।
तन का दीपक, मन की बाती, साँसों की धूप हिला करके।।

भारत माता की रात दिवस आरती उतारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
हम कफ़न बाँधकर निकले हैं तूफान से टकराना जानें।
गोविन्द सिंह के पुत्र सबल कब मौत से घबराना जानें।।

दीवारों में चिनवा खुद को किस्मत को निखारा करते हैं।
दुख–दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।
पर हित में दान हड्डियों का बनकर दधीचि कर देते हैं।
भिक्षा का पात्र 'मनीषी' हम दे दान तुरत भर देते हैं।।
भूचाल धरा पर आता जब थोड़ा सा इशारा करते हैं।
दुख– दर्द को अपनाकर हँसकर खुशियों से किनारा करते हैं।।

प्रो. डॉ सारस्वत मोहन 'मनीषी'
डी–801, बैस्टेक पार्क व्यू संस्कृति एपार्टमेंट, सैक्टर –92,
नया गुरुग्राम हरियाणा–122505
मो. 9810835335

शंका समाधान

(1) प्रश्नः क्या गणेश का मुँह हाथी का था ?

उत्तर–हाथी के बच्चे का मुँह इतना चौड़ा होता है कि उसका भार एक छोटे बच्चे का शरीर कैसे सम्भालेगा? अरे उस हाथी के सिर और मनुष्य के बच्चे का तो व्यास (Diameter) ही आपस में मेल नहीं खायेगा? और जैसा कि शिव पुराण की कथा में आता है कि शिवजी ने क्रोध में गणेश का सिर काट दिया, तो फिर वो हाथी के बच्चे का ही शरीर क्यों ढूँढने दौड़े? उन्होंने वही अपने पुत्र का मनुष्य का कटा हुआ सिर क्यों नहीं लगाया? ये सब मिथ्या और अप्रामाणिक बाते हैं।

(2) प्रश्नः क्या राम और कृष्ण ईश्वर या ईश्वर के अवतार थे ?

उत्तर–नहीं ! ईश्वर शरीर में नहीं आता। वह निराकार है। हम जानते हैं कि कोई पदार्थ जब परिवर्तित होता है तो वह अपनी पहली वाली अवस्था से या तो बेहतर होता है या कम? तो अगर ईश्वर का अवतार मानें तो क्या वह पहले से बेहतर हुआ? अगर हाँ तो क्या वह पहले पूर्ण नहीं था? तो फिर सृष्टि को कैसे रचता? और यदि पहले से उसकी शक्ति कम हुई तो यह भी दोष की बात है। दूसरी बात यह है कि ईश्वर निराकार है और अनन्त शक्ति वाला। पर मनुष्य सीमित शक्ति वाला है। अवतार केवल जीवों का होता है जिसे पुनर्जन्म कहते हैं। ईश्वर का अवतार कभी नहीं होता।

दुर्गा, काली, लक्ष्मी, सरस्वती, कैला ज्वाला, शीतला, संतोषी, वैष्णो, कामाख्या करवा जैसी देवियों के चित्र काल्पनिक हैं। इनकी सत्यता को कोई प्रमाणित नहीं कर सकता। इन्हीं कल्पित देवी देवताओं और महापुरुषों को ही ईश्वर वा उसका अवतार मानने के कारण हमारा देश विदेशी आक्रान्ताओं का गुलाम हुआ था और आज भी इन्हीं अंधविश्वास पाखंड के कारण गुलामी की ओर अग्रसर है।

स्वामी दयानंद सरस्वती ने वेदों पर आधारित आर्य समाज के नियम में लिखा है कि– वेव सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है। वेद का पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है। सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये। आओ सभी मिथ्या ग्रंथों को छोड़ कर वेद की ओर लौट चलें।

श्रीकान्त श्रुति
मो. 9815407826

वेवस्य त्वा सवितुः प्रसवेऽश्विनोर्बाहुभ्यां पूष्णो हस्ताभ्याम्। अग्नये जुष्टं गृह्णाम्यग्नीषोमाभ्यां जुष्टं गृह्णामि।। 10।।

भावार्थ : विद्वान् मनुष्यों को उचित है कि विद्वानों का समागम वा अच्छे प्रकार अपने पुरुषार्थ से परमेश्वर की उत्पन्न की हुई प्रत्यक्ष सृष्टि अर्थात् संसार में सकल विद्या की सिद्धि के लिये सूर्य चन्द्र अग्नि और जल आदि पदार्थों के प्रकाश से सबके बल वीर्य की वृद्धि के लिये अनेक विद्याओ को पढ़ के उनका प्रचार करना चाहिये अर्थात् जैसे जगदीश्वर ने सब पदार्थों की उत्पत्ति और उनकी धारण से सबका उपकार किया है वैसे ही हम लोगों को भी नित्य प्रयत्न करना चाहिए।

डी.ए.वी. सेक्टर-8, पंचकूला ने चलाया 'नो नशा नेशन' अभियान

डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी मॉडल स्कूल, सेक्टर–8, पंचकूला ने, आर्य युवा समाज के अध्यक्ष श्री योगी सूरी जी के प्रेरणादायी नेतृत्व में नगर निगम पार्क, सेक्टर 20 में कई सार्थक गतिविधियों का आयोजन किया।

भव्य 100 कुंडीय यज्ञ का आयोजन किया गया, जो पवित्र चिंतन और नशा– मुक्त राष्ट्र के निर्माण हेतु सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रतीक था।

यज्ञ पर विद्यालय की प्रबंधक श्रीमती जस्करण हरिका मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहीं।

100 से अधिक विद्यार्थियों और लगभग 80 शिक्षकों ने भक्ति एवं समर्पण के साथ भाग लिया, और सामाजिक उत्तरदायित्व एवं राष्ट्रीय कल्याण का संदेश फैलाया।

छात्रों, शिक्षकों और समुदाय के सदस्यों ने एक साथ स्वर मिलाते हुए नशे से दूर रहने और दूसरों को भी स्वस्थ व नशा मुक्त जीवन की ओर मार्गदर्शन देने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम स्थल पर विशेष "सिग्नेचर बोर्ड" लगाया गया, जिसमें 250 स्टाफ, छात्र एवं आगंतुकों ने हस्ताक्षर कर "नो नशा नेशन अभियान को अपना पूर्ण समर्थन दिया।

एक सशक्त नुक्कड़ नाटक के प्रभावशाली प्रदर्शन ने नशे की भयावहता तथा इस समस्या के समाधान में युवाओं की अग्रणी भूमिका को उजागर किया। छात्रों ने नशा मुक्ति के संदेश से भरे आकर्षक पोस्टर एवं नारे बनाए।

एक ऊर्जावान जागरूकता रैली निकाली गई। विद्यार्थियों ने सेक्टर 20 में मार्च करते हुए पंपलेट वितरित किए और निवासियों से संवाद कर उन्हें नशे के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक किया।

निवासियों ने छात्रों और शिक्षकों की प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी की भावना की सराहना की।

डीएवी पब्लिक स्कूल, अम्बाला शहर में 'नो नशा संकल्प'

डी.ए.वी. सीनियर सेकेंडरी पब्लिक स्कूल, अंबाला शहर द्वारा "नो नशा नेशन" संकल्प के अंतर्गत 100 कुंडीय वैदिक महायज्ञ का आयोजन पालिका विहार पार्क में किया गया।

विद्यालय के प्राचार्य डॉ. राधा रमण सूरी ने इस महायज्ञ का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए कहा कि यह आयोजन केवल एक धार्मिक विधि नहीं, बल्कि सामाजिक सुधार, आत्मचेतना और युवा पीढ़ी को नशे जैसे विनाशकारी अभिशाप से बचाने का राष्ट्रीय संकल्प है।

आचार्य नवीन आर्य के ब्रह्मत्व में शताधिक कुंडों में आहुतियाँ दी गईं। यज्ञ के पश्चात नशा मुक्त भारत बनाने के लिए एक शपथ ली गई।

सिविल अस्पताल के नोडल अधिकारी डॉ. राजेन्द्र राय द्वारा नशे के दुष्प्रभावों पर प्रस्तुति दी गई।

विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत नुक्कड़ नाटक ने आर्थिक क्षरण, सामाजिक टूटन और व्यक्तिगत विनाश के चित्रों को जीवंत कर दर्शाया।

कार्यक्रम में शहर के प्रतिष्ठित नागरिक श्री जे. एस. जौली, श्री गुलशन भाटिया, श्री राजेन्द्र वसिष्ठ, डॉ. राजेन्द्र राय, विशेष रूप से उपस्थित रहे।

डॉ. राजेन्द्र राय ने कहा "नशा केवल शरीर को नहीं, परिवारों की आत्मा को तोड़ देता है; आज का यह यज्ञ उसी अंधकार को मिटाने का संकल्प है।"

इस आयोजन में अम्बाला के समर्पित आर्यजन तथा शैक्षिक एवं समाज सेवी संस्थाओं के प्रतिनिधि शामिल हुए।

डी.ए.वी. विद्यालय जयपुर में कक्षा-12 के छात्रों का 'विदाई दिवस'

डी.ए.वी. विद्यालय जयपुर में विद्यालय के 12वीं कक्षा के छात्रों का विदाई समारोह 'संकल्प दिवस' के रूप में आयोजित हुआ। विद्यालय अपनी वैदिक विचारधारा के कारण प्रत्येक आयोजन को वैदिक स्वरूप देकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव करता है।

'संकल्प–दिवस' डी.ए.वी. परिवार के सभी शिक्षकों व अन्य स्टाफ कर्मचारियों ने सर्वप्रथम प्रातः कालीन हवन के साथ प्रारम्भ किया। इस अवसर पर छात्रों ने विद्यालय के प्रति आभार भरे शब्द प्रकट किए और विद्यालय का नाम रोशन करने का संकल्प लिया।

प्रातः हवन के साथ संकल्प दिवस समारोह का शुभारम्भ हुआ। तत्पश्चात् विद्यालय सभागार में छात्रों ने नृत्य, संगीत व वक्तव्य के साथ विद्यालय के प्रति अपनी भावनाओं को व्यक्त किया।

विद्यालय के प्राचार्य श्रीमान अशोक कुमार शर्मा ने छात्रों के प्रति अपने स्नेह को मधुर स्वर में उजागर किया व शिक्षकों के साथ मिलकर गीत के माध्यम से छात्रों को आशीर्वाद दिया। इसी अवसर पर छात्रों को बोर्ड परीक्षा के लिए आवश्यक निर्देश व सफलता प्राप्ति के सूत्र बताए गए। नर्सरी से 12वीं कक्षा तक विद्यालय में ही अध्ययन करने वाले छात्रों व विशेष प्रतिभा रखने वाले कुछ अन्य छात्रो को सम्मानित किया गया।

अन्त में सभी छात्रों के उज्ज्वल भविष्य की कामना के साथ मिष्ठान व प्रवेश पत्र वितरित किये गए। और सभी ने प्रीतिभोज ग्रहण किया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2024-25-26
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2024-25-26
Posted at L.P.C.(Delhi RMS)D110006 ON Wednesday & Thursday, 2025

डी.ए.वी. नवीन पनवेल में रक्तदान शिविर

डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, न्यू पनवेल, आर्य युवा समाज, महाराष्ट्र और गुजरात तथा लायंस क्लब ऑफ न्यू पनवेल स्टील टाउन के संयुक्त तत्वावधान में टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल के सहयोग से एक स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। यह शिविर डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, सेक्टर–10, न्यू पनवेल परिसर में संपन्न हुआ।

इस शिविर का मुख्य उद्देश्य समाज में रक्तदान के प्रति जागरूकता बढ़ाना तथा आवश्यकता पड़ने पर मरीज़ों को सुरक्षित रक्त उपलब्ध कराना था। शिविर में टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल की प्रशिक्षित चिकित्सा टीम द्वारा रक्त संग्रह की प्रक्रिया को पूर्ण स्वच्छता, सुरक्षा एवं निर्धारित चिकित्सकीय मानकों के अनुसार संपन्न किया गया।

शिविर में स्थानीय नागरिकों, युवाओं एवं स्वयंसेवकों ने बड़ी संख्या में स्वेच्छा से रक्तदान किया। रक्तदाताओं के लिए पूर्व स्वास्थ्य जाँच, चिकित्सकीय परामर्श एवं जलपान की समुचित व्यवस्था की गई थी। सभी रक्तदाताओं के उत्साह, सहयोग एवं समर्पण के परिणामस्वरूप कुल 89 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया।

इस सेवा–कार्य के सफल आयोजन में डी.ए.वी पब्लिक स्कूल, नवीन पनवेल के प्रधानाचार्य श्री सुमंत घोष, विद्यालय के समस्त स्टाफ, लायंस क्लब के पदाधिकारी, टाटा मेमोरियल हॉस्पिटल की चिकित्सा टीम का विशेष योगदान रहा। प्रधानाचार्य श्री सुमंत घोष ने सभी रक्तदाताओं, स्वयंसेवकों एवं सहयोगी संस्थाओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भविष्य में भी ऐसे जनसेवा कार्य निरंतर आयोजित करने का संकल्प व्यक्त किया।

यह रक्तदान शिविर मानवीय सेवा, सामाजिक सहयोग एवं जनकल्याण की भावना को सुदृढ़ करने की दिशा में एक सराहनीय एवं प्रेरणादायक पहल सिद्ध हुआ।

सोहन लाल डी.ए.वी. शिक्षा महाविद्यालय में इंट्रा कॉलेज कार्यक्रम

सोहन लाल शिक्षा महाविद्यालय अम्बाला शहर में नशा विरोधी जागरूकता अभियान के अंतर्गत इंट्रा कॉलेज गतिविधि का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों को बताया गया कि नशा मानसिक, भावनात्मक एवं सामाजिक स्वास्थ्य पर गहरा नकारात्मक प्रभाव डालता है।

महाविद्यालय में 'इंट्रा कॉलेज पावर प्वाइंट प्रेज़ेंटेशन प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने अपने प्रस्तुतिकरण के माध्यम से नशा मुक्त, संतुलित एवं स्वस्थ जीवन अपनाने का संदेश दिया।

प्रतिभागियों को सकारात्मक सोच, तनाव प्रबंधन तथा स्वस्थ मानसिक स्वास्थ्य बनाए रखने के उपायों के प्रति भी जागरूक किया गया।

प्राचार्या डॉ. पूजा ने कहा कि इस प्रकार के जागरूकता कार्यक्रम पहले भी आयोजित किए जाते रहे हैं और आगे भी निरंतर आयोजित किए जाते रहेंगे।

महाविद्यालय में गठित एंटी–ड्रग अवेयरनेस सेल के माध्यम से भविष्य में भी इस प्रकार की गतिविधियों को निरंतर आयोजित करने का संकल्प लिया गया।

डी.ए.वी. सेक्टर–39डी चण्डीगढ़ में वार्षिक सांस्कृतिक समारोह

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर 39 डी, चंडीगढ़ में विद्यालय का वार्षिक सांस्कृतिक समारोह टैगोर थिएटर में आयोजित किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि डॉ. प्रतीक किशोर (डायरेक्टर जनरल) के अतिरिक्त डॉ. एस. मरिया, श्री आदर्श कोहली तथा श्रीमती स्वीन पुरी ने कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई।

कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक परंपरा के अनुरूप हुआ। विद्यार्थियों द्वारा प्रस्तुत विविध सांस्कृतिक नृत्य समूह नृत्य एवं भावपूर्ण प्रस्तुतियाँ मुख्य आकर्षण रहीं।

इस अवसर पर संस्कृत को भारत की प्राचीन एवं गौरवशाली भाषा के रूप में प्रस्तुत किया गया। यह संदेश दिया गया कि संस्कृत जो हमारे संस्कारों और राष्ट्रीय पहचान को सुदृढ़ करती है।

डॉ. प्रतीक किशोर जी ने अपने संबोधन में विद्यार्थियों की प्रतिभा की मुक्तकंठ से सराहना करते हुए कहा कि ऐसे सांस्कृतिक आयोजनों से विद्यार्थियों में संस्कार, अनुशासन, आत्मविश्वास एवं सामाजिक चेतना का विकास होता है।

प्रधानाचार्या श्रीमती मनिन्दर वोहरा ने कहा कि विद्यालय शिक्षा के साथ–साथ विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास पर विशेष ध्यान देता है। उन्होंने सभी अतिथियों का आभार व्यक्त किया तथा बच्चों के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **फर्स्ट इम्प्रैशन कार्पोरेट सर्विसिज, (प्रा.) लि.,** ई.113–114, सैक्टर–63, नोएडा, उ.प्र.–201301 (दूरभाष : 120–4246315) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**